पूरा महात्म

नौ देवीयों की अमर कथा





चण्डी चमत्कार

नौ देवीयों की पूरी कहानी

पाठ आरतीयें भजन भेटें

(पहिला भाग)

उस्ताद कवि —
मौनधारी संत दरबारा सिंह (सतिकरतार)

कवि व प्रकाशक :—
गुरबख्श सिंह 'ज्ञान' ऐण्ड सन्ज
दलजीत सिंह 'दिलबर', गुरदयाल सिंह 'गालिब'
गुरमुख सिंह 'गुलछन', भरपूर सिंह 'आलम'
बचित्र सिंह 'बाज'

सतिकरतार पुस्तक भण्डार (रजि०)
संगत पुरा, लुधियाना
ब्रांच : कटड़ा वैष्णों देवी (जम्मू कश्मीर)

विषय सूची

पंना नं:

स्तुति श्री गनेश जी

प्रथम ध्यान है आपका, गणपति श्री गनेश
तुम सागर गुण ज्ञान के, देवो शुंभ उपदेश।
बल बुध्दि दो लिखूं मैं, दुर्गा का विरतंत
कोटि कोटि बन्दन करूं, बखशो वर भगवंत।

स्तुति श्री महाकाली

खड़ग खप्पर धारनी, करे रक्त का पान।
त्रसूल चक्कर हाथ ले, काली करे कल्यान।
शुंभ निशुंभ की फौज का, जिसने किया सिंघार
उस महा काली को मेरी, बदन बारम्बार।

स्तुति श्री महा लक्षमी

कमल फूल पर सोहबती, महा लक्षमी मात।
सर्व जगत पूजा करे, जिस की दिन अर रात।
दया करे जिस जीव पर, उसके सिद्ध हैं काम।
महा लक्षमी जी को मेरी, कोट कोट प्रणाम।

स्तुति श्री सरस्वती

एक चित हो मईया जी का, जो जन करते ध्यान।
सरस्वती जी उन्हों को, सरसुती बखशे दान।
भक्त तारनी मईया जी के, दर्शन की है आस।
छिन छिन में बदना करे, सरस्वती को दास।

स्तुति श्री वैष्णों देवी

श्री वैष्णों मईया जी का, सुन्दर भवन कमाल।
सीस छतर गल सूहा चोला, बांहीं चूड़ा लाल।
कष्ट हरे उस जीव के, जिस पर मां का हाथ।
श्री वैष्णों जी को बंदन, करूं निर्मता साथ।

॥ श्री जगदम्बकाये नमः ॥

०० चण्डी चमत्कार ००

नौ देवीयों की अमर कथा

० मंगला चरण ०

नमो नमो दुर्गा माँ जगदम्बे, नमो नमो मेरी मय्या अम्बे।
चरण शरण में आया दास, हृदय में तुम करो निवास।
कथा करी प्रारम्भ तुम्हारी, आप रचो लीला अति भारी।
महिमा तेरी अपरंपार, मैं नादान क्या जानूं सार।

० श्री दुर्गा स्तुति ०

भगवती श्री दुर्गा आदि शक्ति जीकी अठारह भुजाओं में ढाल, तलवार, खड्ग, गदा, चक्कर, पदम, महा मनि नाग पाल कुल्हाड़ा, बाण फनुष्य, नेजा, गुर्ज कमण्डल शंख, कमल फल, घंटा, एरावत, अठारह भुजाओं में यह अठारह वस्तुए सोभाग्यमान हैं। देवी की अठारह भुजाएं समयनुसार हज़ार भुजाओं से भी अधिक काम करती हैं। देवी के तीन नेत्र हैं, सीत पर मुकुट, कानों में कुन्डल, कंगन, हार अति शोभित हैं। शेर पर सवार होकर राक्षसों का नाश करने वाली जगत जननी मय्या को मैं कोटि कोटि प्रणाम करता हुआ इस आदि शक्ति श्री दुर्गा वैष्णों जी की अमर कथा का वर्णन में अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार कहने से पहले महिषासुर की जन्म कथा कहता हूं :—कि महिषासुर का नाम महिषासुर क्यों

पुकारा जाता है और महिषासुर का इन्दर के साथ युध्द क्यों हुआ था, इस का क्या कारन है।

महिषासुर का इन्द्रपुरी पर हमला करने का कारन

दैत्यवर धनू के रम्भ और करम्भ दो पुत्र थे। उन्हों का सब राक्षसों में बड़ा सन्मान था, परन्तु इन दोनों के घर संतान नहीं थी। पुत्र पाने के लिए उन्हों ने घोर तपस्या की, भाव करम्भ ने पांच दरयाओं के संगम पर जल के बीच बैठ कर घोर तप किया। रम्भ ने पांच दरयाओं के संगम पर बैठ कर घोर तप किया, इनकी घोर तपस्या देख कर इन्दर अति दुखी होकर पंचनंद पहुंचा गराह का स्वरूप धारण करके जल में प्रवेश किया तपस्या करते हुए करम्भ के पांव पकड़ कर नीचे खींच लिया करम्भ मृत्यु हो गया, करम्भ की मौत देख कर रम्भ के मन में ऐसा करोध उत्पन हुआ कि वह करम्भ के संसकार होते समय अपना शरीर अग्नि को भेंट कर देने को तयार हो गया। अग्नि देवता प्रकट होकर कहने लगे, तुम मूर्खता से आत्म हत्या का पाप, शरीर का त्याग क्यों करते हो ? ऐसा करने से तुम्हारा कौन सा कार्य सिध्द होगा, जो तुम्हें चाहिये मुझ से वरदान मांगो। यह सुन कर रम्भ कहने लगा। यदि आप प्रसंन हुए हैं तो मुझे त्रिलोकी पर विजय प्राप्त करने वाले सूरबीर पुत्र का ही

वरदान दीजिये । अग्नि देव कहने लगे तुम्हारी आशा पूर्ण होगी परन्तु जिस सुन्दरी भारया पर तुम्हारा मन आ जायेगा, उसी के पेट से महान बालक पैदा होगा, दैंत रंभ वरदान प्राप्त करके अग्नि देव को प्रणाम करता हुआ अपने घर लौट आया । रंभ का स्थान अति सुन्दर आलीशान था, पशु भावापन राक्षस तो पहले ही था परन्तु काम ने इसकी बुध्दि और भी भ्रष्ट कर डाली काम भाव से रंभ की दृष्टि एक महेंषि पर पड़ गई । रंभ महेषि पर मोहत हो गया । होनी बड़ी बलवान है । रंभ के वीर्य से महेषि गर्भवती हो गई । कुछ समय के बाद महाँ बलि बालक का महेषि के पेट से जन्म हुआ इस लिए इस का नाम महिषासुर रखा गया, रंभ के बाद दानवों के मुख्य नेताओं ने एकत्रित होकर महिषासुर को वहाँ का राज्य सौंप दिया ।

महिषासुर को ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त होना

कुछ समय के बाद महिषासुर ने सुमेर पर्वत पर जाकर घोर तपस्या की । ब्रह्मा जी प्रसंन होकर वरदान देने को स्वयं आए और कहने लगे, हे भक्त ! जो तेरी इच्छा हो मांग लो, मैं तुम पर अति प्रसन्न हूं महिषासुर कहने लगा महाराज मैं सदा जीवित रहना चाहता हूं । आव मुझे काल ग्रहन न कर सके, ऐसा वरदान दीजिए।

ब्रह्मा जी कहने लगे, जो संसार के अंदर जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी अवश्य होती है। अन्य जो चाहो वरदान मांग लो फिर महिषासुर कहने लगा, महाराज मेरा काल ना ही हो तो बहतर है, हां यदि हो भी जाए तो किसी कंवारी कन्या के हाथ से हो। देवता दैत्य, दानव किसी भी पुरुष से मेरा काल न हो। और जैसा भी में अपना स्वरूप धारण करना चाहूं सो कर सकूं। ब्रह्मा जी वरदान देकर अन्तर-ध्यान हो गए, और महिषासुर अपने स्थान पर पहुंच गया परन्तु ऐसा वरदान प्राप्त करके महिषासुर अति प्रसंन हो कर विचार करने लगा कि जो स्त्री अबला कंवारी कन्या है, जिसका पति हो न हो वह भला मुझ कैसे मार सकती है। अब तो मैं अपने चाचे करम्भ का इन्दर से जरूर बदला ले लूंगा।

महिषासुर का इन्दर के साथ घोर युध्द

कुछ समय के बाद महिषासुर ने वरदान के अभिमान में इन्दर के पास अपना दूत भेजा और कहा कि तुम अपना राज हमें सौंप कर जहां से कहीं दूर चले जाओ, यदि तीन रोज़ तक तुम ने अपना राज्य हमें न सौंपा तो तुम्हें हमारे साथ युद्ध करना पड़ेगा इतना कह कर दूत वापिस लौट आया। उधर इन्दर भी अपनी सेना को बुला कर विधी पूर्वक महिषासुर के साथ युध्द करने को त्यारी करनेलगा।

महिषासुर हज़ारों राक्षसों की सेना लेकर इन्दर से युद्ध करने के लिए आया। उधर इन्दर भी अपनी सेनाको लेकर रणभूमि में पहुंच गया। इन्दरकी सेना और महिषा सुर की सेना का सौ वर्ष तक घोर युध्द होता रहा महिषा सुर की सेना ने कई सुरजनों (देवताओं) को इन्दरपुरी से निकाल दिया, बहुतसारों को मृत्यु के घाट उतार दिया और उन से इन्दर पुरी का राज्य छीन कर सूर्य, चन्द,जल, वायु अग्नि आदि देवताओं पर अपना अधिकार करके तथा आप इन्दर बन गया।

देवताओं की ब्रह्मा शिव तथा विष्णु जी के पास फरयाद

प्राज्य हो कर देवता इन्दर को साथ लेकर ब्रह्मा जी के पास पहुंच कर कहने लगे, महाराज! हमारा राज्य महिषासुर ने छीन लिया है, हमारा उस से एक सौ वर्ष तक घोर युध्द होता रहा है।आपहमारी सहायता करने की कृपा कीजिए। ब्रह्मा जी कहने लगे,महिषासुर को वरदान का अभिमान है उसे कुवारी कन्या ही मार सकती है,पुरुष नहीं मार सकते। इस लिए हम सब मिल कर शंकर जी के पास चलते हैं, तथा उन्हें भी अपने साथ मिला कर सभी देवते भगवान विष्णु जी के पास पहुंच कर कहने लगे महाराज, दैत महिषासुर हमें प्रहान कष्ट पहुंचा रहा है।

ब्रह्मा जी ने उसे यह वरदान दे दिया है कि तुम किसी भी पुरुष से नहीं मरोगे। यदि मरोगे भी तो किसी कुवारी कन्या के हाथों से मरोगे। महिषासुर ने इस वरदान के अभिमान से हमारे साथ सौ वर्ष तक घोर युद्धकरके इन्दर पुरी का राज्य छीन लिया है। हम सब लोग बेवश होकर पर्वत मालाओं की गोदों में भटकते फिरते हैं, और इस कार्य को कठिन जान कर आप की शरण में आए हैं। आप इस पर विचार करके हमारा कार्य सिध्द करने की कृपा करें। तब भगवान विष्णु जी ने सोच कर कहा कि हम सब लोगों की समिलित शक्ति से कोई देवी प्रकट हो जाए तो वह उसे मारने में सफल हो सकती है।

दुर्गा जी का प्रकट होना

महिषासुर के जुलम तथा अभिमान सुन कर सभी देवते अत्यन्त क्रोधित हो गए शक्ति दवारा सभी देवताओं के मुख से एक ऐसा ज्वाला का तेज निकला, जो ऐसे अनुभव होता था कि जैसे ज्वाला के पहाड़ जल रहे हैं। सभी देवताओं के तेज इकत्रित हो गए तो इस तेज में देवताओं की शक्ति दवारा शक्ति जी का स्वरूप दृष्टि पड़ा और इसी तेज में शक्ति जी की रचना के लिए देवताओं ने स्वयं अपने बल में क्या २ भेंट कीया? भगवान की अपार रचना का वर्णन मैं कर तो नहीं सकता, परन्तु अपनी तुच्छ बुध्दि अनुसार कहता हूं :—

शक्ति के विशाल मुख की रचना शिवजी के बल से उत्पन हुई, मोतियों की भाँति सुन्दर दांतों की रचना प्रजा पति के बल से हुई। अधिअंत लाल मामय अधरोकण्ठ की रचना अरुणके बलसे हुई, ऊपर के होंठ की रचना स्वामी कार्तिक के बल से हुई, सुन्दर नथनों की रचना कुबेर के बल से हुई, कमान की तरह अकर्षित भरवटों की रचना सनियां के बल से हुई, सिर के केशों की रचना यमराज के बल से हुई, दो कानों की रचना वायु के बल से हुई, अठारां भुजाओं की रचना विष्णु के बल से हुई, हाथ की अंगुलियों की रचना वसूओं के बल से हुई, दो रतनों की रचना चन्दरमा के बल से हुई। मध्य भाग की रचना इन्दर के बल से हुई, नितम्भ भाग की रचना धरती के बल से हुई, दो जंघाओं तथा पिन्डलियों की रचना वरुण के बल से हुई, दो पांवों की रचना ब्रह्मा के बल से हुई, पांवोंकी अंगुलियोंकी रचना सूर्य के बलसे हुई,इसी प्रकार सभी देवताओंकी शक्ति तथा रूपसे कन्या के रूप में शक्ति जी का स्वरूप बना। भाव सब रूपों के एकत्रित हुए। रूप को स्वरूप कहा जाता है, सो सभी देवताओं की रचना दवारा ही श्री दुर्गा शक्ति जी प्रकट हुए। दैत्यवर महिषासुर की सेना के साथ युद्ध करते को देवताओं ने दुर्गा जी को शस्त्र वस्त्र भेंट किये। चक्कर विष्णु जी ने भेंट कीया, त्रिसुल शिवजी ने भेंट कीया,

दण्ड यमराज ने भेंट कीया, धनुष्य तथा बाणों का पत्था वायु ने भेंट कीया।

रुदराश की माला प्रजा-पति ने भेंट की, तेज सूर्य ने भेट कींया, शंख पातजल ने भेंट कीया। ढाल काल ने भेंट की, कमण्डल ब्रह्मा जी ने भेंट किया, घंटा ऐरावत तथा बज्जर इन्दर ने भेंट कीया, महामनी श्री बासक जी ने भेंट की, शक्ति अग्नि देवता ने भेंट की, मनि कांगना चूड़ा कुण्डल कड़े सर्व भुजाओं के लिए कैयूर दोनों चरणों के लिए निर्मल नैपुर, गले की हंसली और सर्व उंगलियों में पहरने के लिए अंगूठियां यह सर्व श्रंगार सिंध सागर ने भेंट किए। स्वारी के लिए शेर हिमगिरी ने भेंट कीया कुल्हाढ़ा और तेज तलवार व लोहे के वस्त्र तथा सुन्दर भूषण विशकर्मा जी ने भेंट कीये। सभी देवते श्री दुर्गा शक्ति जी को प्रनाम करके कहने लगे, हमें महिषासुर दैत्य ने अत्यन्त कष्ट दिया है। आप उस अहंकारी जीवको मार कर हमारे संकट दूर करने की कृपा कीजिए। यह सुनते ही श्री शक्ति जी शस्त्र वस्त्र पहिन कर देवताओं की सहायता के लिए रणभूमि में पहुंच गई। माता जी का तेज बहुत सुन्दर तथा बुलन्द था। जब माता भूमि पर पांव रखती थी तो पृथ्वी काँप उठती थी।

महिषासुर का विचार

माता जी को शेर पर सवार देख कर महिषासुर अशचर्ज हो कर विचार करने लगा, कि यह तो कुंवारी कन्या आदि शक्ति मेरा काल करने के लिए आ गई है, मैंने जो वरदान प्राप्त किया था, उस के अनुसार तो अब मेरा काल अवश्य हो जायेगा, सबसे अच्छा यही है कि मैं इस आदि शक्ति से युद्ध करने से इन्कार कर दूं। इतने में श्री दुर्गा जी ने जय जगदम्बा के स्वर में नाहरा लगाया। तो महषासुर कहने लगा मैं एक स्त्री जाति से नहीं लड़ता, स्त्रीयों से तो कायर लड़ते हैं। मैं तो बड़े बड़े सूरवीरों से लड़ने वाला मुख्य दानव हूं तो तूं एक स्त्री मेरा क्या विगाड़ सकती हो। मेरे सामने तो बड़े बड़े योद्धा नहीं ठहर सकते तुरंत प्राज्य हो कर भाग जाते हैं। इस लिए भली भांत तुम वापस लौट जाओ। माता जी कहने लगे हे अभिमानी ! मैं तेरे अभिमान को चूर चूर करने तथा तुम्हें मौत के घाट उतारने आई हूं तेरे अभिमान की संसार में हाहाकार मच रही है अब तुम्हारा आखरी समय आ गया है, तुम अपने दैत्यों को लड़ने के लिए बुला लो।

महिषासुर की सेना से माता जी का घोर युद्ध

महिषासुर ने तामर दैत्य की कमान में एक हजार राक्षसों की सेना माता जी से युध्द करने के लिए भेजी।

माता जी ने राक्षसों को मार कर भूमि पर गिरा दिया। तामर दैत्य रण भूमि से भाग गया। फिर महिषासुर ने वाष्कल असूर महानू दैत्य और दुमूर्ख दैत्य के साथ एक लाख सेना, हाथी तथा घोड़ों पर सवार करके रणभूमि में भेजी। परन्तु माता ने खंडे से हज़ारों राक्षसों के सीस काट काट कर धरती पर गिरा दिये, वाष्कल असुर महानू दैत्य और दुमुर्ख दैत्य को भी मार दिया, फिर महिषासुर ने मुख्य २ दानवों की दस लाख फौज भेजी जिस में चिक्षू राक्षस, ताम राक्षस, आसलोमा और विडाला राक्षस जैसे अनेकों राक्षस शामल थे। यह सभी दानव एकत्रित होकर माता जी से घोर युद्ध करने लगे, माता जी शस्त्रों को तेज करके रणभूमि में गरज उठी, शक्ति जीने शक्ति से चक्कर चलाकर लाखों राक्षसों को खत्म कर दिया राक्षसों ने भी बहुत जोर शोर से माता जी पर बार किए प्रन्तु माता जी ने राक्षसों पर बाणों की ऐसी वर्षा की जिससे रणभूमि में खून के फुहारे चलने लग पड़े पृथ्वी पर खून के सिवाये और कुछ भी दिखाई नहीं देता था। दानवों का दल देख कर हैरान रह गया। माता जी ने शक्ति से शत्रुओं को मार डाला तथा कईयों को रणभूमि से भगा दीया।

महिषासुर का माता जी से घोर युद्ध

जब चिक्षू राक्षस, ताम राक्षस, असिलोमा और बिडाला राक्षस का भी सिघार हो गया, तोफिर स्वयं आप महिषासुर बीस लाख राक्षसों की फौज, हाथी, रथ, घोड़ों पर सवार करके माता जी से युद्ध करने को आया और माता जी पर तोमर शक्ति, मूसल, खड़ग, परशु और पटाश आदि अस्त्र शस्त्रों के बहुत जोर शोर से बार किए कई राक्षसों ने माता जी पर वाणों की वर्षा की, परन्तु माता जी ने अपने बाणों से शत्रुओं के बाणों को काट दिया। गदा, चक्कर और तेग चला कर हाथी रथ घोड़ों को मार दिया। लाखों राक्षसों को भी खत्म कर दिया। महिषासुर अपनी सेना की ऐसी दशा देख कर हाथी का रूप धारण करके सुंड से बड़े बड़े पत्थर उठा कर माता जी पर फैंकने लगा। परन्तु माता जी ने चक्कर चला कर सुंड को काट दिया फिर महिषासुर ने शेर का रूप धारण कर के भबक मार कर माता जी के शेर को मार देने का इरादा किया प्रन्तु माता जीके शेरने भी बड़े जोर शोर की गर्ज से भब्रक मारी तो शीघ्र ही तलवार से माता जी ने राक्षस के शेर का सीस भी काट दिया, इस प्रकार कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में मार करता रहा, परन्तु सभी बार बिरथा ही गए। फिर महिषासुर ने सण्डे का रूप धारण करके माता जी को तीखे सींगों से मार देने का

ख्याल किया। माता जी ने क्रोध में आकर तलवार से संडे का सीसभी काटदिया।जब महिषासुर कोई औररूप धारन करने को संडे के धड़ से अपना शरीर बाहर निकालनेलगा तो अम्बा जीने महा मनि नाग पाल से महिषासुर को बांध लिया, जब महिषासुर बलहीन हो गया तो क्षमा मांग कर कहने लगा, हे शक्ति अब मेरा अभिमान टूट गया है आप मेरी मुक्ति करने से पहले मुझे मेरा अहार अवश्य दीजिये। माता जी ने पूछा तुम्हारा क्या अहार है ? महिषासुर ने माता जी से वचन लेकर महेशी के सुत झोटे का अहार मांगा। माता जी ने राक्षस को झोटे का अहार देकर अन्त में उसे भी मार दिया। सभी देवताओं ने प्रसंन होकर माताजी के ऊपर फूलों की वर्षा करतेहुए जै दुर्गा जै शक्ति जै जगदम्बा के नाम से जैकारियों की धुन से श्री दुर्गा जी की स्तुति की, माता जी ने कहा कुछ वरदान माँगो सभी देवताओं ने कहा जब भीड़ बने तो रक्षा करनी माता जी अर्शीवाद देकर अंतर ध्यान हो गए, इन्दर फिर उसी तरह इन्दरपुरी का राज्य करने लगा। बोल साचे दरबार की जै

चगड मुगड की रक्त बीज तथा शुम्भ निशुम्भ से विचार

भगवती दुर्गा आदि शक्ति जी के बल की महिमा देख कर

चण्ड मुण्ड, रक्त बीज, राज दैत्य शुम्भ निशुम्भ के पास पहुंच कर कहने लगे, देवताओं ने एक देवी प्रकट की है जिस ने महिषासुर के लाखों दानवों की सेना को क्षण भर में मार कर भूमि पर गिरा दिया है और महिषासुर को भी समाप्त कर दिया है। कहीं ऐसा ना हो देवी महिषासुर की तरह हम लोगों को भी जीत ले। इस लिए हमें सभी दैत्य वरों को मिल कर देवताओं पर हमला करके देवी को मार देने का तुरन्त ही कोई उपाय करना चाहिए। यह सुन कर सभी राक्षस एकत्रित हो गए।

शुम्भ निशुम्भ का इन्द्रपुरी पर हमला

शुम्भ निशुम्भ नामक मुखी दानवों ने चण्ड मुण्ड और रक्तबीज को साथ ले कर अपने बल के घुमण्ड में आ कर इन्दरपुरी पर हमला कर दिया, देवराज इन्दर और शुम्भ निशुम्भ की फौज का घोर युद्ध हुआ। प्रन्तु दानवों का दल बड़ा भारी था, इस लिए शुम्भ निशुम्भ ने इन्दर से त्रिलोकी का राज्य छीन कर यज्ञा, चंद सूर्य, जल, वायु, अग्नि आदि सभी देवताओं पर अपना अधिकार कर लिया, शुम्भ निशुम्भ का ऐसा आक्रमण देखकर सभी देवते माता जी को याद करते हुए कहने लगे, हे दुर्गा आदि शक्ति सर्व जगत की सहायता करने वाली मय्या जी आप ने हमें

वचन दिया था कि जब कोई भीड़ पड़े तब तुम मुझे याद करना, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी, अब दैत्य शुम्भ निशुम्भ ने अपने बल के अभिमान में आकर हमारे से इन्दर पुरी का राज छीन लिया है। इस लिए हमारी सहायता करें, देवताओं की फरयाद सुनकर दुर्गा आदि शक्ति जी माता पारवतीके अंक से प्रकट होकर हिमालय पर्वत पर भजन करने लग पड़ी, शुम्भ निशुम्भ का एक राक्षस भी हिमालय पर घूमता घूमता माता जी पास चला गया, माता जी का सुन्दर सरूप देख कर कहने लगा, तुम कैसी सुन्दर स्त्री हो, इस लिए मेरी आशा है कि तुम इन्दर पुरी के राज दैत्य शुम्भ से शादी कर लो सूरज, चन्द, जल, वायु, अग्नि आदि सर्व देवताओं पर उसका अधिकार है, वहाँ तुम्हारी और भी शान बढ़ेगी, माता बोली तुम सच्च कहते हो, परन्तु इस के पहले मैं एक प्रतिज्ञा कर चुकी हूं कि जो मेरे से युद्ध करके मुझे जीत ले वह मेरा पति होगा। इस लिए मैं अपने वचन का पालन करूंगी, अगर वह चाहे तो मेरे से युध्द करे, राक्षस बोला देवी ऐसा न कहो शुम्भ निशुम्भ से युध्द करना कोई आसान काम नहीं है, उनके आगे तो बड़े २ योधे नहीं ठहर सकते, शीघर ही हार खाकर भाग जाते हैं, माता जी ने कहा शुम्भ निशुम्भ के अत्याचारों की संसार में हाहाकार मच गई है अब उनका आखरी समय आ गया है, मैं दुर्गा आदि शक्ति हूं, दुष्ट

का नाश और भक्तों की रक्षा करने वाली हूं, तुम जाकर शुम्भ निशुम्भ को मेरा संदेश सुना दो, दैत्य ने विस्थार पूर्वक सब हाल जाकर शुम्भ निशुंभ को सुना दिया, शुंभ निशुम्भ ने युध्य की त्यारी करके, दैत्य चुण्ड मुण्ड के साथ अपनी सेना माता जी के साथ युध्द करने को भेजी।

चुराड मुराड से माता जी का घोर युध्द

शुम्भ निशुंभ ने माने हुए दानव चण्ड मुण्ड़ के साथ दस लाख राक्षसों की सेना भेजी,जो बड़े जोर शोर से रण भूमि में गर्जने लगे और कहने लगे तेरे भूरे शेर को मार कर तुझे महाराज के पास ले जायंगे,दैत्योंके सिर पर काल बली नाच रहा था, लेकिन इन दैत्यों ने काल की सुधों को भुला रखा था, परन्तु माता जी ने धनुष्य को उठा कर बाणों की ऐसी वर्षा की जैसे ओलों की वर्षा होती है, चण्ड मुण्ड के दानव दल को माता जीने च्यूटियों की भाँतिपृथ्वी पर सुला दिया, और चण्ड मुण्ड को भी मार डाला जब माता जी ने चण्ड मुण्ड का सिधार कर दिया, तो चण्ड का पहला लफज (च) मुंड का पूरा लफज (मुण्ड) लेकर साथ में केवल (ा) कन्ना ही लगाने से माता जी का नाम (चमुण्डा देवी) पड़ गया, सभी देवते देख कर माता जी के ऊपर फुलों की वर्षा करते हुए जै दुर्गा (जै शक्ति चमुण्डा देवी) कहते हुए माता जी की स्तुनि करने लगे।

रक्त बीज से माता जी का घोर युद्ध और महांकाली नव दुर्गा का प्रकट होना

जब चण्ड मुण्ड और इनकी सेना भी खत्म हो गई तो फिर रक्त बीज हासल किए वरदान के घुमण्ड में, बिना फौज के अकेला ही माता जी से युद्ध करने को आया इस ने घोर तप करके शंकर जी से वरदान प्राप्त कीया हुआ था कि जहां मेरे रक्त की एक बूंद गिरे वहाँ एक एक सूरवीर दानव पैदा हो, ऐसा वरदान प्राप्त होने से रक्त बीज का दानव दल कैसे खत्म हो सकता था। रक्त बीज के बरदान का इस दानव दल को बहुत मान था, परन्तु माता जी भी अस्त्र शस्त्रों को तेज करके रण भूमि में आ गई, गदा चक्र और तेग चलाकर बहुत जोर शोर से वाणों की वर्षा करते हुए माता जी ने रक्त बीज के साथ घोर, युध्द कीया। मानो इतना घोर युध्द किया कि जितने भी शस्त्र माता जी के पास थे, वह सब घात से प्रवाह हो रहे थे, और जहां जितनी भी रक्त बूंद गिरती थी, वहाँ उतने ही और दानव पैदा हो जाते थे, तब माता जी मन में अति घबराई और विचार किया कि अब यह दानव दल मुझ से कैसे खत्म हो सकेगा, फिर शक्ति जी ने शंकर जी का ध्यान लगा कर एक रक्त बूंद अपनी चीची से निकाल कर भूमि पर गिराई तो भयंकर रूप में नव दुर्गा महां काली योगनियों की भूप प्रकटी, और चौसठ

योगनियों भी महाँ काली जी के साथ प्रकट हुई, तब माता जी ने महाँकाली जी को रण भूमि में जिहवा फैलाने को कहा, कि रक्त बीज की जितनी रक्त बूंदें गिरें उनको तुम भूमि पर गिरने नहीं देना, अपितु जिहवा फैला कर रक्त बीज की रक्त बूंद को पान कर लेना, फिर मैं रक्त बीज को मार दूंगी। महां काली जी ने चौसठ योगनियों को रण भूमि में रक्त बूंद के खप्पर भर भर कर पान करने को कहा, तब माता जी ने रक्तबीज की एक जांघ काट दी महां काली और चोसठ योगनियों ने रक्त का पान कर लिया, फिर माता जी ने रक्त बीज की दूसरी जांघ भी काट दी इस तरह दुर्गा जी रक्त बीज का अंग अंग काटती जाती थी, और महां काली तथा योगनियों रक्त का पान करती जाती थी जब माता जी ने रक्त बीज का सिंघार कर दीया तो देवताओं ने माता जी के ऊपर फूलों की वर्षा करते हुए जै जगदम्बा के नाम से नाहरे लगाए।

निशुम्भ दैत्य से दुर्गा और महाकाली जी का घोर युद्ध

जब रक्त बीज महान योधा भी मारा गया तो फिर दैत्य वर निशुम्भ बीस लाख दानवों की सेना लेकर रण भूमि में आया, बहुत जोर शोर की गर्ज से माता जी को

धमकाने लगा, प्रन्तु माता जी और महाँ काली जी भी
अस्त्रों शस्त्रों को तेज करके रण भूमि में आ गई, दुर्गा जी
और महाँकाली जी ने खंडे से लाखों राक्षसों के सीस काट
काट कर पृथ्वी पर गिरा दिए और निशुम्भ का सीस भी
काट दीया, देवताओं ने माता जी और महांकाली जी के
ऊपर फूलों की वर्षा करते हुए जै दुर्गा जै शक्ति, जै महां
काली जी के नाम दवारा धुन लगाई तो जैकारियों से
आसमान गूंज उठा।

राज दैत्य शुम्भ का माता जी और महांकाली जी से घोर युध्द

जब निशुम्भ दैत्य भी मारा गया तो भाई की मौत देख
कर राज दानव दैत्य वर शुंभ क्रोध से आंखें लाल कर
माता जी से युद्ध करने को रणभूमि में आया, शुंभ ने बहु
जोर शोर से माता जी पर वार कीये परन्तु माता जी व
तिल मात्र भी चोट न लगी, माता जी और महांकाली ज
ने दैत्य के सबी वार काटदिए, शुंभ दैत्य माता जीका बा
भी बांका न कर सका, माता जी के बाणों की चोटें खा
कर लाखों राक्षस धरती पर गिर पड़े, माता जी और म
काली जी ने रणभूमि का कोना कोना छान कर दानव द
को मार डाला और दैत्य शुंभ का सीस भी काट दीय
सभी देवताओं ने माता जी और महांकाली जी के ऊ

फुलों की वर्षा करते हुए जै दुर्गा शक्ति, जै महाकाली जी के नाम दुआरा जैकारियों की गूंज से माता जी की स्तुति की, इन्दर फिर उसी तरह इन्दरपुरी का राज करने लगा। बोल साचे दरबार की जय ।।

श्री महांकाली जी की अमर कथा

रक्त बीज के साथ होते युध्द समय माता जी ने भगवान शंकर जी का ध्यान लगा कर अपनी चीची से एक रक्त बूंद निकाल कर सहायता के लिए महाकालीजी को प्रकट किया, दुर्गा जी और महांकाली जी को रणभूमि में दानवों पर क्रोध की ऐसी चण्डी चढ़ी जिस के दुआरा पृथ्वी कांपने लग पड़ी कि जैसे धरती पर भूचाल आ जाता है। बहुत जोर शोर से ऐसा घोर युध्द हुआ कि युध्द क्षेत्र में खून के फुहारे व खून की नदीयें बहने लग पड़ीं, दुर्गा जी और महांकाली जी ने रक्त बीज, शुम्भ, निशुम्भ तथा उनकी फौज को च्यूटियों की भांति पृथ्वी पर सुला दिया शेष दैत्य माता जी की शर्नी पड़ गए, सबी देवते देख कर माता जी ऊपर फुलों की वर्षा करते हुए जय दुर्गा, जय शक्ति, जय महाकाली कहने लगे। देवताओं के सर्व कार्य सिध्द करके माता जी अन्तर ध्यान हो गए। परन्तु युध्द के खत्म हो जाने पर भी महां काली जी का करोध शांत न हुआ, महांकाली जी को ऐसा करोध उत्पन्न हुआ कि जो भी देवी देवता उसके सामने आ जाता था तो काली उसको भसम कर देती थी। भगवान

शंकर जी काली ज़ी का क्रोध शांत करने के लिए काली जी के आगे लेट गए,जब काली जी ने शिवजी की देही पर पांव रखा तो उसने नीचे देखा कि भगवान शंकर जी लेटे हुए हैं, इस लिए काली जी ने अपनी जिह्वा निकाल कर अपने किये हुए अपराध को महसूस किया, कि मैंने कैलाश पति भगवान शंकर जी पर पांव रखा है, इतना महसूस करते ही काली जी का गुस्सा शांत हो गया,महाकाली जी कलकत्ते शहर में पहुंच गई। वहां श्रधालु प्रेमियों ने काली जी का मन्दिर त्यार करवाया। निष्चय वाले भक्तों को फल प्राप्त होता है। बोल साचे दरबार की जै ।।

देवीयों की रचना, श्री दुर्गा प्रकाश

प्राचीन काल समय शिव पत्नी सति ने पती देव शंकर जी से पूछा, कि हे स्वामी जीं वह रथ कहाँ जा रहे हैं, भगवान शंकर जी ने कहा यह बात आपको पूछने की क्या अवश्यकता है। छोड़ो इसका ध्यान, सति का हठ देखकर आखर शंकर जी को कहना ही पड़ा कि यह रथ आपके पिता दक्ष प्रजा पति के यज्ञा में जा रहें हैं,यह सुनकर सति ने कहा पति देव यज्ञा में हम भी भाग लेने को चलें। शंकर जी ने कहा भला बिन बुलाये हम वहाँ कैसे जा सकते हैं, सति ने कहा स्वामी ! हमने कौन सा किसी गैर

के घर जाना है, हमारे पिता जी का ही घर है, अपने पिता के घर भला बिन बुलाए जाने पर भी कौन सी बुरी बात है, फिर शंकर जी ने कहा दक्ष ने हमारा अपमान करने के लिए ही इस यज्ञा का विधान कीया है, इस लिए हमारा वहां जाना अच्छा नहीं, सति हठ करके कहने लगी स्वामी जी आप जाएं, चाहें न जाएं, वरना मैं तो वहां जरूर जाऊंगी, राज हठ, योग हठ, बाल हठ, स्त्री हठ, यह चारों हठ बहुत कठिन हैं आखर सति अपने पति देव शंकर से हठ करके पिता के यज्ञ में भाग लेने के लिए अकेली ही चली गई, सति ने जाकर देखा कि सभी देवताओं के लिए सिंघासन बने हुए थे परन्तु शंकर जी के लिए कोई सिंघासन नज़र न पड़ा, सति को देखकर दक्ष प्रजा पति ने सति के सन्मुख शिव का अपमान कीया, जिसे देखकर सति सहन न कर सकी, तो अति क्रोध में आकर सति ने हवन कुण्ड में अपनी अहूती दे दी। जब शिव को इस बात का पता चला तब उन्हों ने अपनी विधी दुआरा दक्ष का यज्ञा खंडत कर दिया और संसार के सर्व कार्य को त्याग कर विराग में आकर सति के भुसले हुए शव को कंधे पर उठाकर सर्व भारत में चक्कर लगाने लगे, इस प्रकार उन्मत होने के कारण सहार-कार्य रुक जाने पर समस्त संसार में हाहाकार मच गया,सृष्टि की सहायता के लिए भगवान विष्णू जी जी ने अपना धनुष बाण उठा कर सति के अंग प्रअंग

काट दिये और शिव के कन्धों से सति शव का भार उतार दिया। इस प्रकार जिस जिस स्थान पर सति का जो जो अंग गिर गया, वही पर सति मन्दिर (श्री दुर्गा जी का प्रकाश) हुआ, कालका कलकत्ता में श्री सति के (केश) गिरे, वहां पर काली एवं कालका नाम प्रकट हुआ पूर्व दिशा (असाम) देश गोहाटी तथा बृहम पुत्र के पास नील-चल पर्वत पर (कुख) अंग गिरा, वहां पर (कुमख्या) देवी की रचना हुई, सहारन पुर के पास शिवा लोक पर्वत पर सीस गिरा, वहां पर शुकम्बरा देवी का दर्शन है। पश्चिम दिशा की तर्फ (कराचो) के पास मकाईन की पहाड़ियोंपर सति के हाथ गिरे, वहां पर (हिन्ग) लाज नाम प्रकट हुआ चन्डीगड़ मनी माजरा के निकट मस्तक गिरा, वहां पर मन्सा देवी के मन्दिर की रचना हुई, नंगल भाखड़ा की लाईन पर श्री अनन्दपुर साहिब से उतर दिशा की तरफ महिषा पीठ पर्वत पर सति के नैन गिरे, वहाँ पर भगवती नैनां देवी प्रकट हुई, हुश्यार पुर तथा भरवाई के पास चरण अंश गिरे वहां पर (शिव मस्तका) देवी जी का मन्दिर, माता चिंत पुरनी जी के नाम से प्रसिध्द है। ज्वाला जी की पहाड़ियों पर सति की जिव्वा गिरी वहां पर ज्वाला मुखी देवी का मन्दिर स्थापित हुआ। कांगड़ा में सति के स्तन गिरे, वहां पर बृजेष्वरी देवी का नगर कोट धाम बना सटेट जम्मू कशमीर की तर्फ कटड़ा टाऊनके

श्रागे त्रिकूट मणी पर्वत पर बाजू गिरे, वहां पर देवी का नाम (वैष्णवी) प्रसिध्द हूश्रा इसी प्रकार उत्तर से दक्षिण पूर्व श्रौर पश्चिम तक ५१ देवीयों की रचना एवं (दुर्गा प्रकाश) हुश्रा है।

श्री वैष्णों–श्रमर कथा

श्री वैष्णों देवी का स्थान रियासत जम्मू में कटड़ा के सात मील त्रिकूट मणी पर्वत की चढ़ाई चढ़ कर श्राता है। इस जगह सती के बाजू गिरे थे यहां पर देवी का नाम वैष्णों प्रसिध्द हुश्रा, स्टेट जम्मू कश्मीर में राजा (चन्दर देव रानी सुधरमा वती) ईश्वर की भक्ति तथा धर्म का प्रचार करने वाले स्त्री पुरुष थे। परंतु इन के घर संतान नहीं थी। उस समय देश में बहुत से लोग भैरों उपासक मधरा मास का श्रहार करते थे, राजा श्रौर रानी राक्षस बुध्दि वाले ऐसे लोगों पर बहुत नराज रहतेथे। एक समय राजा चंदर देव रानी सुधरमा वती हरिद्वार गंगा जी की यात्रा को गये, उस समय के महात्मा (गुरु हंस देव) जी गंगा जी के तट पर रहते थे श्रौर वहीं धर्म प्रचार करते थे। राजा चंदर देव रानी सुधरमा वती गुरु जी से मिले, उन्होंने संतान प्राप्तीके लिए चण्डीपाठ हवन यज्ञ,करवाने की विधि बताई। राजा ने गुरु हंस देव का धर्म प्रचार तथा ब्रह्म ज्ञान भरी बातें सुन कर कहा, गुरु जी हमारे

(जम्मू देश) में भी धर्म प्रचार करके लोगों को अच्छे मार्ग पर चलने का उपदेश दीजिए। राजा का कहा मान कर गुरु हन्स देव जी जम्मू देश में आए, धर्म प्रचार करके लोगों को अच्छे मारग लगाया। विधी पूर्वक चन्डी पाठ, हवन यज्ञ किया। और भगवती की कृपा से राजा के घर एक सुन्दर कन्या का जन्महुआ,उसका नाम (चन्दर भागा) रखा। कुछ समय के बाद एक पुत्र भी पैदा हुआ जिस का नाम (चन्दर शील) रखा। जब चन्दर भागा वर प्राप्त हुई तो माता पिता ने उसकी शादी रमेश पुर के राजकुमार (शांता कार) से कर दी। मन्त्री पुर जिसको वजीरां बाद कहते हैं वहां पर एक सौ गाँव का राज भी दहेज में दे दिया। चन्दर भागा और शांताकार मन्त्री पुर में विधी पूर्वक से राज करने लगे। जब राजा चन्दरदेव जीने अपने पुत्र की शादी का समागम रचाया तो गुरु हन्स देवजी को भी याद किया,गुरु हंस देव जी राजा का संदेश मिलने पर जम्मू पधारे। चन्दर भागा और शांता कार भी शादी का समाचार मिलने पर जम्मू आये। राजा ने गुरु हंस देव जी का बहुत सन्मान किया। गुरु हन्स देव ने शांताकार के मस्तक की रेखा देख कर अपने योग बल से राजा चन्दर देव को यह कह दिया कि आठ रोज तक शांता कार की मौत हो जाएगी। इतना सुनते ही सब को

आत्मा को अति कष्ट हुआ और शांता कार के जीवत रहने का उपाय पूछा, गुरु जी ने कहा आप की पुत्री चन्दर भागा भगवती वैष्णों देवी की अराधना प्रारम्भ कर देवे तो उसके पति के प्राण बच सकते हैं।

चन्दर भागा और शांता कार मंत्री पुर पहुंच कर दुर्गा पूजन करने लगे। सम्मत के दिवस नदी पर स्नान करने को गये, कुदरत से तूफान की तरह बहुत जोर की आंधी आई जिससे एक वृक्ष का डाल टूट कर शांता कार के सीस पर लगने से उसकी मौत हो गई। चन्दर भागा गशी खा कर धरती पर गिर पड़ी और विरलाप करती हुई कहने लगी सर्व संसार की सहायता करने वाली जगत दुर्गा माता वैष्णों, मेरे पति को जीवन दान देकर मेरी आशा पूर्ण करो, नहीं तो साथ ही मैं भो सता हो जाऊंगी। अन्न त्याग कर मरण बरत का हठ धारण करके दुर्गा पूजा करने लगी। जब चन्दर भागा की नौं दिवस नौं रातें समाधी लगी रही दसमी के दिवस श्री वैष्णों माता जी इसकी पुकार सुन कर सहायता के लिए नदी चन्दर भागा से प्रगट हो कर शेर सवार हो कर सामने आ गई। तथा प्रत्यक्ष दर्शन देकर शांताकार को सुरजीत कर दिया। जब जब भक्तों पर भीड़ पड़ती है माता छिन छिन रूप धारण करके रक्षा करती है।

जो चंदर भागा ने एकम से लेकर नौंमी तक, नौं दिवस, नौं रातें अन्न छोड़ कर माता का जाप किया है यही नौं नवरात्रे कहलाते हैं। कई भक्त सात नवरात्रे आठवीं अष्टमी पूजते हैं। परन्तु जो नवरात्रे शब्द हैं, इसका शुद्ध अर्थ यही प्रतीत होता है जो चन्दर भागा ने नौ रातें दुर्गा का जाप किया है। नौं रातें जाप करने से ही इसका नाम नवरात्रे पड़ गया है। असल में एकम से लेकर दसवीं तक दुर्गा पूजा का महात्म होता है।

चन्दर भागा की तरह आज कल भी हिन्दुस्तान की देवीयें, आप अपने मनोरथ पूर्ण करने के लिए नवरात्रों में बरत रखती है। माता सब की आशा पूर्ण करती है। चन्दर भागा नदी के किनारे मन्त्रीपुर में एक छोटा सा मन्दिर है, माता जी वहां रहने लगी। भक्त दर्शन करके पाठ, हवन यज्ञ करवाने लगे, कुछ समय के बाद माता जी मन्त्री पुत्र से जम्मू दीप व श्री नगर कश्मीर की तरफ चली गई।

कौल कन्धोली मन्दिर

माता वैष्णों देवी जम्मू के आठ मील आगे कौल कन्धोली आ गई, यह मन्दिर माता जी का प्रथम दर्शन है यहाँ माता जी बाल कन्याके रूप में लड़कियों के साथ खेनू खेलती रही हैं। यहां पर माता जी ने अपनी शक्ति द्वारा

स्वर्ण चांदी के बर्तन बनाकर लड़कियों को कई प्रकार के चमत्कार भी दिखाए। माता जी ने कौल कन्धोली में बड़ा भारी यज्ञ रचाया,स्वर्ण चांदी के खाली बर्तनों में माता जी की शक्ति द्वारा भाँत भांत के खाने त्यार हो गये, माता जी की महिमा सुन कर एक जोगियों की मण्डली आई, जिसका मुख्य योगी भैरों नाथ था। माता जी ने इस सिद्ध मण्डली को भोजन कहा भैरों बोला मेरे साथ अनगिन्त शिश हैं, आप इतनी बड़ी मंडली को भोजन से प्रसन्न न कर सकोगी। माता जी ने कहा भगवान की कृपा दुआरा आपके सर्व साधुओंको भोजन खिलाऊंगी भैरों बोला पहले इन सब साधुओं को भोजन खलाओ जब ये सबी साधु भोजन से प्रसन्न हो जायेंगे तो पीछे मैं भी भोजन पालूंगा। जब यह सब साधु भोजन खाने लगे तो साधुओं ने बहुत जोर लगाया कि भंडारा खत्म हो जाए, परन्तु माता जी आप दुर्गा आदि शक्ति है जो इन छोटे छोटे बर्तनों में से सब को भोजन खिलाकर प्रसन्न कर रही है। जब यह सबी साधु भोजन खाकर चले गये, आखिर भैरों की बारी भी आ गई इस ने विचार किया कि मैं अब ऐसा भोजन मांगूं जो यह देवी मुझे न दे सके और न ही इसका यज्ञ सम्पूर्ण हो, भैरों ने अपने मन में ऐसी खोटी नियत धारण कर ली, जब भोजन खाने को गया।

माताजीने कहा आओ जोगी भोजनकरो,भैरों बोला हमतो मध्य मास का अहार करते हैं,मुझे मेरा भोजन ही मिलना चाहिए। माता जी ने कहा साधुयों को मध्य मास नहीं खाना चाहिए, आप को तो और लोगों को भी मध्य मास से रोक कर वैष्णों भोजन का उपदेश करना चाहिये। फिर भैरों बोला,मैं ने सुना है कि तुम सब की इच्छा पूर्ण करती हो हमारी भी इच्छा पूर्ण कीजिए माताजी भैरों की नियत देख कर कौल कन्धोली को छोड़ कर आगे चली गई।

देवां माई का मन्दिर

कौल कन्धोली से माता जी देवां माई के स्थान पर आ गई। देवाँ माई भगवती दुर्गा की बड़ी पुजारन थी, बचपन से लेकर सारी आयु इसने दुर्गा पूजा में ही बतीत कर रखी थी। देवाँ माई की भक्ति और प्रेम देख कर भगवती वैष्णों देवी जीने उसको यह वरदान दिया कि जो भक्त तेरी सेवा करेंगे उनकी आशा पूर्ण होगी। इस स्थान की बहुत से भक्त (देवाँ का ढक्क) बोलते हैं। यह मंदिर माता जी का दूसरा दर्शन है। देवां माई का मंदिर कटड़े से चार मील की दूरी पर है। माता जी की खबर लेता लेता भैरों यहां पर भी आ गया। माता जी भैरों की अवाज़ सुन कर वहां से भूमिका स्थान में पहुंच गई।

भूमिका मन्दिर

देवां माई के मन्दिर से भगवती वैष्णों देवी कटड़ा टाऊन के निकट हंसली भूमका स्थान की भूमि में रहनेलगीं इस स्थान को भुवनेष्वरी मन्दिर भी कहते हैं। इसके चारों तरफ की सीनरियें बहुत ही सुन्दर निराले ढंग की हैं और छोटे छोटे चश्मों से निर्मल जल की धारा चल रही है यहां पर भक्त जन स्नान करते हुए भूमका मन्दिर का दर्शन करते हैं।

यह स्थान कटड़े से सिर्फ एक मील दूरी पर है, कटड़ा समुन्दर तल से 2840 फुट की ऊंचाई पर है और त्रिकूटा पर्वत 8876 फुट की ऊचाई पर है। कटड़े से दर्शनी द्वार सिर्फ आधा मील है जब भैरों यहां पर भी आ गया, माता जी भूमिका स्थान छोड़ कर आगे दर्शन द्वार की तरफ चली गई।

मन्दिर श्री दर्शनी द्वार

भूमका की भूमि को पवित्र करते हुये माता जी दर्शनी द्वार की भूमि पर पहुंच गई। आगे लंगर बीर का मेल हुआ सहायता के लिए साथ ले लिया। दर्शनी द्वार से उत्तर, दिशा की ओर त्रिकुट मणि पर्वत को प्रेम भरी दृष्टि से देख कर माता जी इस पर्वत की धरती को पवित्र करने के लिये चल पड़े।

श्री बाल गंगा मन्दिर

दर्शनी द्वार से त्रिकूट मणि पर्वत के चरणों में पहुंच कर माता जी ने और लंगर वीर ने स्नान किया यहाँ पर निर्मल जल की नदी माता जी ने अपनी शक्ति द्वारा वाण की गहरी चोट से निकाली थी, इस बाल गंगा में स्नान करने का बड़ा भारी महातम है जैसे हरिद्वार गंगा जी में स्नान करने का महातम माना गया है, ऐसे ही बाल गंगा में स्नान करने का महातम है इस लिए सर्व यात्री श्री बाल गंगा में स्नान करके पर्वत की चढ़ाई चढ़ते हैं, यहां पर भी भगवती वैष्णों देवी का मन्दिर अति सुन्दर देखने योग है श्री बाल गंगा मन्दिर के दर्शन स्नान करके जीवन सफल करें।

बाल गंगा से लेकर भवन तक पहले ढक्की का रास्ता ही होता था। अब सरकार ने यात्रियों की आसानी के लिए ढक्की के साथ साथ सड़क का मार्ग भी बना दिया है, अब इस रास्ते से भवन तक घोड़े खचरें भी आसानी से जा सकती हैं,बाल गंगा से माता के भवन तक साथ साथ दोनों रास्ते जाते हैं जिनका एक एक मोड़ पर आपस में मिलाप होता है। कटड़े से बाल गंगा 2 किलोमीटर है, सड़क के

रास्ते से माता का भवन केवल 12.7 किलो मीटर है और ढक्की के रास्ते से माता का भवन सिरफ 7 मील है। जब यहां भो भैरों की आवाज़ माता के कानों में पड़ी, माता जी शेर को उढ़ा कर पहाड़ पर चढ़ गई।

श्री चरण पादुका मन्दिर

बाल गंगा से चल कर समुन्दर तल से 3378 फुट को ऊंचाई पर माता जी के चर्ण लगे इस लिए इस स्थान का नाम चर्ण पादुका पड़गया, मन्दिर में माता की चर्ण पादुकाएं (खडांव) रखी हैं, यह मन्दिर माता जी का तीसरा दर्शन है, भक्त जन दर्शन करते हैं। पास ही पिपल की ठन्डी छाओं और पहाड़ों के नज़ारे देखने से मन अति प्रसन्न होता है, सड़क के रास्ते द्वार कटड़े से चरण पादुका स्थान सिर्फ 4 किलोमीटर है और चरण पादुका से माता का भवन सिरफ 10-7 किलोमीटर है। जब कुकर्मी भैरों माता की भाल में यहाँ भी आ गया माता जी शेर को उड़ा कर आगे चली गई।

श्री आदि कुमारी मन्दिर

चर्ण पादुका से चल कर माता जो समुन्दर तल से 4753 फुट की ऊंचाई पर आदि कुमारी कीं गर्भ जून गुफा में आ गई, यहां पर भी माता जी का मन्दिर अति

सुन्दर देखने योग है, यह माता जी का चौथा दर्शन है, यहां पर एक प्राचीन तालाब है, और एक प्राचीन धर्मशाला बनी हुई है जिस में यात्री लोग आराम करते हैं। रात को ठहिरने के लिए कम्बल विस्तर आदि भी मिलते हैं, सड़क से रास्ते द्वारा कटड़े से आद कुमारी स्थान सिरफ 6—0 किलोमीटर है और आदि कुमारी से माता जी का भवन सिरफ 8-7 किलोमीटर है।

गरभ जून गुफा

यह गुफा आदि कुमारी मन्दिर के पास ही है इस गरभ जून गुफा के दर्शन करने का भी बड़ा भारी महत्व है निश्चे वाले भक्तों को फल प्राप्त होता है। माता जी आदि कुमारी की धरती पर आकर गरभ जून गुफा में समाधी धारन करके ईश्वर भक्ति में लीन हो गई। भैरों यहाँ काफी अरसा तक माता जी को ढूंढता रहा मगर कुछ पता न चला, अंत में इतनी खोज द्वारा उसको यह गुफा नजर पड़ी, जिसमें माता जी को ढूंढने के लिए गुफा के बीच गया, माता जी गुफा फोड़ कर निकल गई।

हाथी मत्था

आदि कुमारी गर्भ जून गुफा से भगवती श्री वैष्णों देवी समुन्दर तल से 6200 फुट की ऊंचाई पर बिखड़े मार्ग की चढ़ाई चढ़ गई। यहां पर हाथी के मस्तक की ऊंचाई

की तरहें सीधी सीढ़ियें हैं इसलिए इस चढ़ाई को हाथी मत्था कहते हैं। पहले ढक्की का रास्ता ही होता था अब भक्तों की आसानी के लिए सरकार ने ढक्की के साथ साथ सड़क भी त्यार कर दो है। अब इस रास्ते से घोड़े खचरें भी आसानो से भवन तक जा सकती हैं। सड़क के रास्ते द्वारा हाथी मत्था 9–2 किलोमीटर है और हाथी मत्थे से माता जो का भवन सिरफ 5–5 किलोमीटर है।

सांझी छत्त

हाथी मत्थे से माता जी पर्वत की ऊंची चोटी समुन्द्र तल से 7215 फुट की ऊंचाई पर चढ़ गई, इस के आगे एक जैसा रास्ता आ जाता है। इस लिए इस जगह का नाम सांझी छत्त पड़ गया है, सर्व रास्ते में खाने पीने वाली चोंजों और चाये की दुकानें भो आती हैं और जगह जगह पर ठन्डे जल की छबीलें प्रेमो भक्तों ने लगवा रखी हैं, माता सब की आशा पूर्ण करती है। सड़क के रास्ते द्वारा कटड़े से सांझी छत्त 10–7 किलोमीटर है और सांझो छत्त से माता जी का भवन सिर्फ 4–0 किलोमोटर है।

भैरों घाटी

सांझी छत्त से माता जी पर्वत के तिरछे मोड़ तथा भयानक जंगल के मार्ग से होती हुई 6583 फुट की ऊंचाई

पर भैरों घाटी की पड़ाव पर पहुंच गई। इस जगह भैरों का मन्दिर भी बना हुआ है, यह मन्दिर पांचवां दर्शन है, प्रन्तु इस का दर्शन माता जी के हुकम अनुसार भक्त आती दफा करतेहैं जो पहले भैरों का दर्शन करके माता की गुफा में जाते हैं उनकी यात्रा सफल नहीं होती। सड़क के रास्ते द्वारा कटड़े से भैरों मन्दिर 12.2 किलोमीटर है और भैरों से माता जी का भवन सिरफ 2.5 किलोमीटर है।

दरबार श्री वैष्णों देवी

भैरों घाटी से माता जी घने महकते और ठंडे जंगल के रास्ते से होती हुई 5780 फुट की ऊंचाई पर महां काली, महां लक्षमी, महां सरस्वती की गुफा में आ गई। कपटी भैरों अपने कुकर्म से अभी न टला। माता का पीछा करता करता यहां तक भी पहुंच गया और माता के आंचल को पकड़ने लगा माता जी ने अति क्रोध में आकर तलवार से भैरों का सीस काट दिया। भैरों माता के चरणों में गिर कर कहने लगा कि हे सच्ची माता मुझे मुआफ कर दो, मैं पापी हूं, अपराधी हूं, दुराचारी हूं परन्तु तुम तो माँ हो पुत्र कपुत्र हो जाते हैं किन्तु माता कुमाता नहीं होती, मेरे पापों को क्षमा करके मेरा उधार ज़रूर करें मैं तुम्हारी शरण में हूं। भैरों से ऐसे शब्द सुनकर माता जी

को दया आ गई और माता जी ने कहा भैरों अब तुम शुद्ध हिरदे वाले हो गए हो। तुम ने मुझे मां कह कर पुकारा है, इस लिये मैं तुझे वरदान देती हूं कि मेरी पूजा के साथ २ तेरी पूजा भी हुआ करेगी परन्तु तुम्हारी धड़ पत्थर की तरह बंजर होकर मेरी गुफा के आगे रहेगी जिस पर भक्त चरण धर कर मेरी गुफा में जाया करेंगे तब तेरी मुक्ति होगी, और मेरे नाम के साथ साथ तुम्हारा नाम भी अमर होता रहेगा।

भैरों मन्दिर

दया रूप होकर माता जी ने भैरों को मुक्ति का अमर वरदान देकर भैरों के सीस को सुदर्शन चक्कर से डेढ मील की दूरी पर गिरा दिया और सीस गिरते ही वहीं पत्थर हो गया, यहां भैरों का सीस गिरा था वही भैरों मन्दिर बना हुआ है। भवन के रास्ते में पहले भैरों मन्दिर आता है प्रन्तु माता जी का हुकम है पहले मेरे दर्शन करो पीछे भैरों के दर्शन करो। जो पहिले भैरों का दर्शन करके मेरी गुफा में आएंगे उनकी यात्रा सफल न होगी।

श्री वैष्णों माता की गुफा

भैरों को यह वरदान देकर माता जी ने श्री महांकाली श्री महांलक्षमी, श्री महां सरस्वती, की गुफा में

निवास किया, माता जी त्रेता युग से लेकर आज तक इस गुफा में भजन कर रहीहै और संसार में वैष्णों भोजन करने का उपदेश करती आ रही है इसलिए यह तीनों पिंडी रूप श्री वैष्णों देवी के नाम से प्रसिद्धहै। खबर मिलने पर प्रेमी भक्तों ने माता जी का सुन्दर भवन त्यार करवाया दूर दूर से भक्त दर्शन को आते हैं। माता सब की आशा निसचे पूर्ण करती है ॥ बोल साचे दरबार की जय ॥

महात्म श्री वैष्णों देवी तीर्थ यात्रा

जम्मू शहर में अनेक मन्दिर हैं, परन्तु रघुनाथ मन्दिर सब से बड़ा मन्दिर है, जिसमें अनेक ठाकरों तथा अवतारों के मन्दिर हैं जो अति सुन्दर देखने योग्य है,जिनकी महिमा लिखने से एक बड़ा भारी ग्रन्थ बन जाता है, जम्मू के आगे आठ मील पर माता जी का प्रथम दर्शन कौल कन्धोली मन्दिर है, आगे टन्डल की गुफा लंघ कर दो मेल की पढ़ाव है, यहां से एक सड़क श्री नगर कश्मीर की ओर दूसरी सड़क रियासी को जाती है, रयासी जाने वाली सड़क पर दो मेल से 11 मील की दूरी पर कटड़ा टाऊन है और रास्ते में नमाई के पास माता जी का दूसरा दर्शन देवां माई का मन्दिर है, यह मन्दिर कटड़े से चार मील की दूरी पर है कटड़ा टाऊन में मन्दिर श्री देवी द्वारा रघु-नाथ मन्दिर, महांवीर जी का मन्दिर है, एक धर्म अर्थ की

सरायें में भी मन्दिर है, दर्शन करके जीवन सफल करो
कटड़ा टाऊन यात्रीयों के आराम करने को पड़ाव है,
यहां से माता जी को चढ़ाने के लिए भेटा, नारियल, चुन्नियां
चोलें, झन्डे सवर्ण चांदी के छत्र भी मिलते हैं, जो सर्व
यात्री आप अपनी शर्धा अनुसार ले जातेहैं जब यात्री कटड़ा
से माता के दर्शन को जाते हैं तो चमड़े का जूता नहीं
पहनते, यात्रा के समय यात्री स्त्री पुरुष जती सती रहते
हैं कटड़ा से चल कर पहिले दर्शनी द्वार आता है, आगे
बाल गंगा मन्दिर है, बाल गंगा में स्नान करके यात्री
पर्वत की चढ़ाई चढ़ते हैं, आगे माता जी का तीसरा
दर्शन चर्ण पादुका मन्दिर है, इस के आगे चोथा दर्शन
आदि कुमारी मन्दिर है, पास छोटी सी गर्भ जून गुफा है
सर्व स्थानों के दर्शन करने का बड़ा भारी महातम माना
गया है, हाथी मत्थे की चड़ाई, सांझी छत्त, इन सब
पड़ायों से होते हुये भैरों मन्दिर आ जाता है, परन्तु
इस के दर्शन भक्त आती दफा करते हैं, आगे
श्री वैष्णवो देवी का भवन अति सुन्दर देखने योग्य
है, माता जी के चरणों से जो निर्मल जल की गंगा चल रही
है, उसी जल के फुहारे के नीचे भक्त स्नान करके
माता के दर्शन को जाते हैं। माता जी की सुन्दर गुफा
की शोभा अति सुन्दर निराले ढंग की है इस गुफा में

माता जी के तीन दर्शन हैं। महाकाली, महांलक्ष्मी, मह
सरस्वती इन तीनों का स्वरूप श्री वैष्णवी देवी के नामप
प्रसिद्ध है। श्री वैष्णों देवी दूध पूत धन तथा लक्ष्मी क
वरदान देकर,सर्व इच्छा मनो कामना पूर्ण करतीहै। भक्त
जन माता जी को भेटा चढ़ा कर मन इच्छा फल प्राप्त
करते हैं और मोली का अटा माता जी के चरणों से लग
कर गले में पहनते हैं, यह दर्शन कर लेने की निशानी है
सीस निवाकर जै जै कार बुलाते हुए भक्त गुफा से बाहर
आते हैं, कन्यां पूजन करके लौंकड़ा वीर जमाते हैं। भवन
और आदि कुमारी में रात को ठहरने का इन्तजाम भी है
सेवा दल वाले सेवादारों से कम्बल दरीयें बिस्तर आदि
मिलता है, श्री वैष्णों देवी का मेला असूज के नवरात्रों से
लेकर मघेर चौदस तक होता था, प्रन्तु अब बारां महीने
ही यात्री दर्शन करते रहते हैं, जो भी भक्त शर्द्धा से आते
हैं माता जी उनकी आशा निसचे पूर्ण करती है।

॥ बोल साचे दरबार की जै ॥

पं० श्री धर जी को माता जी के प्रत्यक्ष दर्शन

कटड़े के निकट हंसली ग्राम में एक पं० श्री धर जी
जी हुए हैं जिन को बचपन से ही श्री दुर्गा माता की भक्ति
का प्रेम था प्रन्तु इस के घर संतान नहीं थी, यह हंसली से
भुमिका मन्दिर में जाकर भगवती वैष्णों देवी की
आराधना में लग गये, नित्य कन्यां पूजन करके भोजन

करते थे। एक रोज पं० श्री धर जी ने यह नियम कर लिया कि जब तक माता वैष्णों देवी आप मुझे आ कर भोजन न खिलायेंगी तब तक में भोजन न पाऊंगा। पहले की तरह जब भक्त कन्यां पूजन करने लगा तो भक्त की प्रतिज्ञा देखकर माता जी ने कन्यां के रूप में दर्शन दीया। सर्व कन्यां प्रशाद लेकर चली गईं, और कह दिव्य कन्याँ वहां ही बैठी रही, भक्त ने उस का नाम पूछा, कन्यां ने कहा तुम पहले भोजन करो, पं० श्री धर जी जान गये यह दिव्य कन्याँ माता वैष्णों ही है। भक्त ने कहा मैंने यह नियम किया हुआ है, कि जब तक माता वैष्णों देवी अपने हाथों से आकर मुझ भोजन न खिलायेंगी तब तक मैं भोजन नहीं पाऊंगा। भक्त का पूर्ण प्रेम देखकर उसी कन्यां ने भक्त को कई प्रकार के भोजन खिलाये, और कहा मैं वैष्णों शक्ति हूं, त्रिकूट मणी पर्वत पर गुफा में मेरा निवास है, सदीयों से मार्ग खराब हो जाने से मेरे स्थान पर कोई नहीं आता, अब तुम यह नियम करो। तुम और तुम्हारा वंस मेरी पूजा करेगा। भक्त नं डंडवत करते हुए स्वीकार कर लिया, कि मैं और मेरा वंस तुम्हारी पूजा करता रहेगा, माता जी पं० श्री धर को चार पुत्र होने का वरदान देकर अन्तरध्धान हो गई पं० श्री धर जी ने उसी समय उस गुफा को ढूंड कर वहाँ की नित्य पूजा करनी प्रारम्भ कर दी। उस के बाद

उनके पुत्र पूजन करते रहे, अब भी उन के वंश के पुजारि
पूजन करते आ रहे हैं। पं० श्री धर जी के जो चार पु
हुए हैं उन्हों की संतान, एक की हंसाली में, दूसरे की नले
में, तीसरे की कड़माल में, और चौथे की सरुन में है। मात
जी ने पं० श्रीधर जी को प्रत्यक्ष दर्शन देकर उसकी आत्म
को प्रसंन किया, सर्व कष्ट दूर करके मुक्ति का वरदान
कर उसका नाम अमर कर दिया।

॥ बोल साचे दरबार की जय ॥

० महाराजा रणजीत देव जी को ०

माता जी के प्रत्यक्ष दर्शन

जम्मू कश्मीर के महाराज रणजीत देव जी हुए हैं
जो छोटी अवस्था में ही बुद्धिमान और बड़े सूरबीर थे
उस समय लाहौर का राज्यपाल मीन मन्नु था। मीर मन्
महाराज के साथ कुछ गुप्त विचार करना चाहता था
मीर मंनु के कई बार कहने से भी महाराज लाहौर
गए, एक बार मीर मंनू ने अपने कुछ सरदार महाराज
को लाहौर लाने के लिए जम्मू भेजे, उन्होंने बहुत यत्न
किये, किंतु वह न माने, एक दिन वह सब लोग महाराज के
साथ शिकार खेलने गये रास्ते में इनके सब साथी बिछड़
गये, रणजीत देव जी रास्ता भूल कर घूमते घूमते त्रिकूट
मणी पर्वत की ओर चले गए। उस समय वहां पर

घोर जंगल बीया बान होता था, उसी जंगल में एक चटान पर 'लाल रंग के वस्त्रों वालो दिव्य कन्यां इन्हें नजर पड़ी, वह उस कन्यां के पास चले गये । देवी ने कहा रणजीत देव रास्ता भूल गये हो महाराज ने कहा आप को कैसे मालूम हुआ है देवी ने कहा मैंने अपने योग्य बल से कह दिया है, रणजीत देव ने कहा आप अकेली यहां कैसे बैठों हो, देवी ने कहा मेरे साथ और भी इन्दर पुरी की अप्शरायें रहतीं हैं, मैं अकेली नहीं हूं। फिर रणजीत देव ने कहा आखिर तुम्हारा नाम क्या है ? देवी ने कहा मैं वैष्णों शक्ति हू। तुम्हारा जो लाहौर जाने का विचार है आप उस पर मत घबरायें, मेरे कहने से लाहौर चले जाईये। आप का बाल भी बाँका न होगा। इतना कह कर माता जी अंतर ध्यान हो गए। रणजीत देव भी अपने राज महल में पहुंच गये। दूसरे दिन मीर मन्नू के साथियों सहित लाहोर चले गए। वहा मीर मन्नु ने इन्हें छल से कैद कर लिया। महाराज मन में विचार करने लगे। उस दिव्य कन्याँ ने तो कहा था आपका बाल बांका न होगा, न जाने यह कया कारण है इन विचारों में ही महाराज को नींद आ गई। उस दिव्य कन्या ने उन्हें सुपने में दर्शन दिये और कहा आप घबरायें मत। मेरे भक्तों को कभी कष्ट नहीं होता, मेरा नाम दुर्गा आदि शक्ति है। महिषासुर, चण्ड मुण्ड रक्त बीच

तथा शुम्भ निशुम्भ जैसे राक्षसों का मैंने ही संहार किया था । भैरों का वध भी मैंने ही किया हैं। सीता तथा पारवती भी मेरा ही अवतार हैं। विष्णु माया, अम्बका, चण्डका, महां काली आदि यह सब मेरे ही स्वरूप हैं, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी। इतना कह कर माता जी अन्तरध्यान हो गई। प्रात काल का समय भी हो गया और महाराज की नींद भी खुल गई। भगवतो की कृपा से दिल्ली नरेश तथा मीर मन्नू ने उन्हें अपना मित्र बना कर कैद से रिहा कर दिया। भगवती के स्थान की पुन खोज करके गुफा तक पहुंचने का मार्ग चलने लायक बनाया, यह प्रति मास दो बार नंगे पांव से देवी के दर्शन करते रहे और यह ५७ वर्ष राज करते हुए माता की भक्ति में लीन रहे।

महाराजा रणजीत देव के बाद उन के भाई राजा सूरत सिंह और इन के स्पुत्र राजा किशोरी सिंह भी माता के सच्चे भक्त थे। इन की धर्म पत्ती माता की बहुत भगतनी थी, नित्य प्रति माता की पूजा किया करती थी, माता जी की कृपा से इन के घर महाराजा गुलाब सिंह का जन्म हुआ। जब बड़े हुए तो राज कार्य सब इनकी कमान में ही रहा, यह भी माता के प्रम भक्त थे और कई बार दर्शनों को भी आये। इन के बाद इनके सूरबीर धर्मावतार सपुत्र महाराजा रणबीर सिंह जी ने

तो माँ वैष्णों की बहुत सेवा की। जम्मू से लेकर कटड़ा के रास्ते में धर्म शालायें तथा कई मन्दिर बनवाये और कटड़े से लेकर भवन तक का रास्ता भी ठीक किया, बात कया, सेवा में अपना जोवन ही लगा दिया। इनके बाद महाराजा प्रताप सिंह तथा महाराजा हरी सिंह माता के परम भक्त रहे। कई बार दर्शन को भी गए और इन्होंने भी देश तथा माता की सेवा भक्ति में अपना सारा जीवन लगा दिया। इस समय भी महाराज डाकटर करण सिंह जी माता के अनन्य भक्त हैं। आप ने यात्रियों की आसानी के लिए मार्ग तथा गुफा में कई सुधार किये और देश रक्षा के लिए तन मन धन भी कुरबान करके रात दिन देश सेवा में लगे रहते हैं. देश और माता के सच्चे भक्त हैं। ॥ बोल साचे दरबार की जय ॥

॥ बाहवे वाली देवी का मन्दिर ॥

यह मन्दिर जम्मू से दक्षिण दिशा और तवी के पार एक छोटी सी पहाड़ी पर दिखाई देताहै इस मन्दिर में श्री महां काली जी की प्राचोन तथा विशाल मूर्ती है। कहते है इस पहाड़ी पर बाहु लोचन नामक एक राजा माता जी की पूजा करता था और महांकाली के वरदान से उस की कहीं हानी न होती थी। यह मन्दिर उस की यादगार में बना हुआ है। इस मन्दिर के दर्शन करने बहुत से भक्त जाते हैं, निश्चय वाले भक्तों के मनोरथ माता पूर्ण करती है। ॥ बोल साचे दरबार की जय ॥

ज्वाला जी की अमर कथा

इस स्थान पर श्रीं सती जी की जिव्हा गिरी थी, इस लिये यहां पर देवी का नाम ज्वाला जी के नाम पर प्रसिद्ध है, और कलकत्ता में राक्षस बुद्धि वाले लोग काली माता को झोटे, पशु, बकरे काट कर भेंट देने लगे। इस लिए जगदम्बा अलोप होकर पहाड़ धरती पर रहने लगी। राक्षस बुद्धि वाले लोग माता जी के आगे यहां भी सन्डे, भेड बकरे काट काट कर भेटा देने लग पड़े परन्तु यह नहीं सोचा कि माता जी ने तो महिषासुर को झोटा काटकर आहार दिया था, पर यह लोग माता जो को ही मांस की भेंट देनें लग पड़े। इसलिए माता जी ने क्रोधित हो कर ज्वाला का रूप धारण करलिया। ज्वाला नाम अग्नि काह और जो साक्षात भगवान की ज्योति होतीहै जिस जोत के प्रकाश से अधेरा दूर होता है, उस जोत का मुख भी है, तो इसलिए जोत का नाम भी ज्वाला मुखी है। माता जी कांगड़े के पास पहाड़ों में आ गए, यह स्थान ज़िला कांगड़ा में है, गोपीपुर डेरा से पांच कोस है, मन्दिर के पास सूर्य कुण्ड है, जिस में भक्त स्नान करते हुए ज्वाला के दर्शन करते हैं। ज्वाला की सात लाटें बिना तेल, बाती के दुर्गा की शक्ति से जग रही हैं। यह सात लाटें सात बहिनों के दर्शन हैं, इस स्थान के पास पहाड़ों के अति सुन्दर दृश्य है। दूर दूर से प्रेमी भक्त आ कर माता जी के दर्शन करने लगे।

दैत्य महिषासुर के साथ किये वचन को पूरा करने के लिये झोटे का सीस काटा था, अब झोटे का सीस काटने को क्या आवश्यकता है, अब कई प्रेमी बकरे का सींस काटकर भेंट करते हैं. परन्तु माता जी को तो किसी प्रकार की बली लेने की इच्छा नहीं है, सचे प्रेमी को मन इच्छा फल प्राप्त होता है। बोल साचे दरबार की जै ।।

श्री ज्वाला जी का महात्म

अकबर ज्वाला जी के मन्दिर में सवा मन सोने का छतर भेंट करके जब अपनी राजधानी देहली में पहुंचा, और वहां जा कर इसने माता जी की महिमा का बहुत प्रचार किया, और साथ ही कई लोगों से यह भी कहने लग पड़ा, कि मेरे जैसा भी कोई माता का भक्त है जिसने माता के मन्दिर में सवा मन सोना दान कर दिया हो, इतनी बड़ी भेंट का मन में फिर अभिमान हो गया, इसलिए वह छात्र फिर अष्ट धातु का बन गया। अभिमान करने से तीर्थ, व्रत, दान, खण्डन हो जाते हैं, यह शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी आता है।

गुरू वाकय

तीर्थ बरत अर दान कर मन में धरे गुमानु।
नानक नेहफल जात है जिउ कुंचर इसनानु।

इस छत्र और मन्दिर का दर्शन प्राचीन बड़े द्वार के

ज्वाला जी की अमर कथा

इस स्थान पर श्रीं सती जी की जिव्हा गिरी थी, इस लिये यहां पर देवी का नाम ज्वाला जी के नाम पर प्रसिद्ध है, और कलकत्ता में राक्षस बुद्धि वाले लोग काली माता को झोटे, पशु, बकरे काट कर भेंट देने लगे। इस लिए जगदम्बा अलोप होकर पहाड़ धरती पर रहने लगी। राक्षस बुद्धि वाले लोग माता जी के आगे यहां भी सन्डे, भेड बकरे काट काट कर भेटा देने लग पड़े परन्तु यह नहीं सोचा कि माता जी ने तो महिषासुर को झोटा काटकर आहार दिया था, पर यह लोग माता जो को ही मांस की भेंट देनें लग पड़े। इसलिए माता जी ने क्रोधित हो कर ज्वाला का रूप धारण करलिया। ज्वाला नाम अग्नि काहै और जो साक्षात भगवान की ज्योति होतीहै जिस जोत के प्रकाश से अधेरा दूर होता है, उस जोत का मुख भी है, तो इसलिए जोत का नाम भी ज्वाला मुखी है। माता जी कांगड़े के पास पहाड़ों में आ गए, यह स्थान ज़िला कांगड़ा में है, गोपीपुर डेरा से पांच कोस है, मन्दिर के पास सूर्य कुण्ड है, जिस में भक्त स्नान करते हुए ज्वाला के दर्शन करते हैं। ज्वाला की सात लाटें बिना तेल, बाती के दुर्गा की शक्ति से जग रही हैं। यह सात लाटें सात बहिनों के दर्शन हैं, इस स्थान के पास पहाड़ों के अति सुन्दर दृश्य है। दूर दूर से प्रेमी भक्त आ कर माता जी के दर्शन करने लगे।

दैत्य महिषासुर के साथ किये वचन को पूरा करने के लिये झोटे का सीस काटा था, अब झोटे का सीस काटने को क्या आवश्यकता है, अब कई प्रेमी बकरे का सींस काटकर भेट करते हैं. परन्तु माता जी को तो किसी प्रकार की बली लेने की इच्छा नहीं है, सचे प्रेमी को मन इच्छा फल प्राप्त होता है। बोल साचे दरबार को जै ॥

श्री ज्वाला जी का महात्म

अकबर ज्वाला जी के मन्दिर में सवा मन सोने का छतर भेट करके जब अपनी राजधानी देहली में पहुंचा, और वहां जा कर इसने माता जी की महिमा का बहुत प्रचार किया, और साथ ही कई लोगों से यह भी कहने लग पड़ा, कि मेरे जैसा भी कोई माता का भक्त है जिसने माता के मन्दिर में सवा मन सोना दान कर दिया हो, इतनी बड़ी भट का मन में फिर अभिमान हो गया, इसलिए वह छात्र फिर अष्ट धातु का बन गया। अभिमान करने से तीर्थ, व्रत, दान, खण्डन हो जाते हैं, यह शब्द श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में भी आता है।

गुरू वाकय

तीर्थ बरत अर दान कर मन में धरे गुमानु।
नानक नेहफल जात है जिउ कुंचर इसनानु।

इस छत्र और मन्दिर का दर्शन प्राचीन बड़े द्वार के

बाहें हाथ है आगे लक्ष्मी जी का मन्दिर है यहां पर दर्शन करने से लक्ष्मी प्रसंन होती है, और लक्ष्मी में अधिकता होती हैं। इसके आगे सूर्य कुन्ड हैं, कई इसको गौरी कुन्ड भी कहते हैं,इसमें स्नान करने का अति फल है,स्नान करके भक्त माता के दर्शन करते हैं, इस मन्दिर में जो सोने की जड़त जड़ी हुई है, यह महाराजा रणजीत सिह जी ने सेवा की हुईहै। और मन्दिर में हाथों से लिखे हुये श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का प्रकाश भी महाराजा रणजीत सिंह जीं ने करवाया हुआ है, यह प्राचीन बड़े द्वार से जाते ही दहिने हाथ निशान साहिब है । आगे गोरख टिब्बी का दर्शन है, यहां पर गोरख नाथ की खिचड़ी का पानी अब तक खोल रहा है, आगे लाल शिवाला है, इस मन्दिर के इर्द गिर्द 24 अवतारों की मूरतीयें हैं, आगे अम्बकेश्वर महादेव जी के मन्दिर के दर्शन करो,इस जगह शिव भन्डार यज्ञ होता है। पास छोटा सा सीतला मन्दिर है, सीता राम मन्दिर कपीस्थल में महांबीर और भैरों के दर्शन करो,टेडे मन्दिर के दर्शन करो, जो एक तर्फ से कुदरती ही झुकिया हुआ दिखाई देताहै। वीर कुण्ड में भी स्नान करने का अति फल है, अष्ट भुजी माता जी का प्राचीन मन्दिर व तारा देवी का मन्दिर तथा सर्व स्थानों का दर्शन करके यात्रा सफल करो। निसचे वाले भक्तों को फल प्राप्त होता है।

॥ बोल साचे दरबार की जै ॥

नैना देवी जी की अमर कथा

नंगल भाखड़ा की लाईन पर श्री आनन्दपुर साहिब से उत्तर दिशा की तरफ महिषापीठ पर्वत की ऊंची चोटी पर प्राचीन पिपली का पेड़ है, इस जगह सती के नैन गिरे थे, यहां पर नैना देवी की रचना हुई और इस पहाड़ी के चार पांच मील के फासले पर थोड़ी सी गुजरों की आबादी थी जिन्हों में एक भक्त नैना गुजर हुआ है। जो रोजाना अपने घर से गाएं भैंसों को चराने के लिए पहाड़ी पर आया था, इस प्राचीन पिपली के पास भक्त नैना गुजर की एक अनसूई गाए का दूध माता जी की शक्ति से अपने आप बहन लग पड़ता था, जब रोज़ाना ऐसा होता रहा तो एक रोज़ भक्त नयना गुजर ने सोचा कि इस जगह में क्या शक्ति है जो रोजाना इस पिपली के पास इस गौ के स्तनों में दूध अपनेआप बहने लग पड़ता है,यह गाय तो अभी सूई भी नहीं,न जाने यह क्या कारणहै। जब भक्त नयना गुजर ने पिपली के झड़े हुए पत्तों को उठाकर देखा तो पिंडी रूप में माता जीका दर्शन हुआ,रात को माताजीने भक्त नयना गुजर को सपने में दर्शन भी दिया और कहा मैं दुर्गा आदि शक्ति हूं। जुलमों का नाश और भक्तों की रक्षा करूंगी तुने मुझे प्रकट किया है। इस लिए मैं तेरे नाम को रोशन करके नयनादेवी के नाम पर प्रसिद्ध हूंगी,तूं इस पिपली के

पास मेरा स्थान बनादे तबभक्त नयना गुजरने माताजी का इस जगह छोटा सा मन्दिर बना दिया, सो इस तरह माता जी का प्रचार धीरे धीरे बड़ने लग पड़ा, दूर दूर से प्रेमी भक्त बड़ी श्रद्धा से आकर पाठ,हवन,यज्ञ करवाने लग पड़े प्रेमी भक्तोंने मिलकर माताजीका यहाँ सुन्दर मन्दिर और हवन कुंड बनवा दिया जो नैना देवी के नाम से प्रसिद्ध है यह स्थान श्री आनन्दपुर साहिब से सात कोस महिषापीठ पर्वत पर दिखाई देता है, जब यात्री श्री नैना देवी जी के दर्शन को जातेहैं तो गुरुदुआरा श्री आनन्दपुर साहिबजी से पहले दर्शन दीदार करते हुए लगर से प्रशाद छककर पैदल यात्रा शुरू करते हैं, रास्ते में बचोली बलियों का प्याऊ तथा जगदम्बे स्वर्ग आश्रम में ठण्डे जल की छबीलें आती हैं आगे कोली का टोबा है, इस के आगे गुरुदुआरा दमदमा साहिब आता है, कहते हैं कि जब श्री गुरू गोबिन्द सिंह साहिब जीने नैना देवी जा कर हवन कराया था,तब रास्ते में यहां दम मारया था,तबसे यह गुरदुआरा दमदमासाहिब के नाम से प्रसिद है,आगे बसी वाले भक्तों का प्याऊ आता है,इसके आग पाधियों का प्याऊ आता है,इसके आगे थोड़ी दूर जा कर सोढियों का तालाब आ जाता है यहां पर नाभे वाले भक्तों का लगर, ठडे जल की छबीलें लगी हुई हैं यहाँ से आगे श्री नैना देवी जी के मन्दिर तक पौड़ीयों का मार्ग चालू हो जाता है पौड़ियों में चने का प्रशाद और ठंडे

ध्यानू भक्त अकबर की कहानी

माता जी का एक सेवक ध्यानू भक्त हुआ है जो नदौन ग्राम से प्रतिवर्ष माता जी के दर्शन को आताथा, एक समय अपनी मण्डली को साथ लेकर ज्वाला मय्या के दर्शन को जा रहाथा तो रास्तेमें देहली से गुजरतेहुये अकबर बादशाह ने पूछा इतनी धूमधाम से चढ़ाई करके कहां चले हो, ध्यानू भक्त ने कहा यह सब यात्री ज्वाला मय्या के दर्शन को जा रहे हैं, अकबर ने कहा वहां जाने से तुम्हें क्या लाभ होता है। ध्यानू भक्त ने कहा—जो निश्चय से माता जी से मांगो, सोई फल प्राप्त होताहै और वहां बिना तेल-बाती के माता की शक्ति से सात जोतें जग रही हैं। अकबर ने कहा, बिना तेल-बाती के चिराग कैसे जल सकता है ? यह बात किसी ग्रंथ तथा वेद शास्त्रों या हमारे कुरान में भी कहीं नहीं लिखी कि बिना तेल-बाती के कहीं चिराग जलता हो यह बात झूठ है मैं नहीं मानता. ध्यानू भक्त ने कहा अगर तुम्हें विश्वास न हो तो आप चलकर देख सकतेहो, इतना सुनकर अकबर कुछ सैनकों को अपनेसाथलेकर, माताकी प्रीक्षा लेने केलिये मन्दिरमें पहुंचा वहां देखातो जोतें जल रहीथीं, देख कर कहने लगा इसका क्या है, मैं अभी बुझा देता हूं, अकबर ने उसी समय जोतों पर लोहे के तवे जड़वा दिए। ज्वाला की शक्ति से तवे फाड़ कर लाटें निकल पड़ीं। अकबर ने कहा आग के तेज से लोहे के तवे जल कर फूट गयें हैं, मैं

अभी पानी डाल कर बुझा देता हूं। अकबर ने पानी मंगवा कर जोतों पर डाला तो वोह फिर भी जलती रही। फिर अकबर ने पर्वत कटवाकर पानी की नहर जोतोंपर डलवाई नहर का पानी पड़ने से मन्दिर में जल-थल हो गया। तब जोतें पहले से भी बढ़कर जलने लगीं, अकबर देखकर हैरान रह गया, ध्यानू भक्त ने कहा, देखो ज्वाला मय्या की शक्ति माता जी तो मरे हुए को भी जिन्दा कर सकती है, अकबर ने यह सुनकर अति क्रोध में आकर ध्यानू भक्त के घोड़े का सीस काट दिया और कहने लगा बुला अब ज्वाला को, जो इसे आकर जिन्दा करे तो मैं भी मान जाऊंगा, कि तेरी माता सच्ची है, नहीं तो घोड़े के साथ तेरा भी सीस काट दूंगा, भक्त ने माता से पुकार की कि हे जगदम्बे मय्या अकबर आप की परीक्षा लेनी चाहता है ऐसा कहता है कि अगर तेरी माता सच्चीहै तो इस घोड़े को जिन्दा करे, तो मैं भी मान जाऊंगा अगर घोड़ा जिन्दा न हुआ तो इसके साथ तेरा भी सीस काट दूंगा, मुझे अपनी जान का तो कुछ खौफ खतरा नहीं, मगर तुम्हारे नाम को आंच नहीं आनी चाहिए, भक्त ने दर्द भरी अवाज़ से माता जी को कहा, हे जगत जननी मय्या मेरी पुकार सुनकर मुझे धीरज दीजिये अगर घोड़ा सुरजीत न हुआ तो फिर पापी अकबर के हाथों से क्यों मरना है, फिर तो मैं इसी खंजर से अपना सीस धड़ से जुदा करके तुम्हारे चरणों में अरपन कर दूंगा,

ध्यानू भक्त ने सारी रात माता का जागरण किया, परन्तु माता जी ने भक्त की परीक्षा लेने के लिए कुछ उत्तर न दिया, ध्यानू भक्त खंजर से अपना सीस काट कर माता की जोत के आगे अरपन करने ही लगा तो उसी समय जवाला मय्या जी ने प्रकट हो कर अर्शीवाद देते हुए ध्यानू भक्त का सीस धड़ के साथ फिर मिला दिया, और घोड़ को भी सावधान कर दिया। बोल साचे दरबार की जय ॥

ध्यानू भक्त ने जै ज्वाला, जै दुर्गा, जै शक्ति के जै कारियों की धुन लगाई तो अकबर का सीस झुक गया, तब वोह सवा मन सोने को छत्र हाथी पर उठा कर आप नांगे पाऊं से ज्वाला मय्या के दर्शन को आया, और मय्या जी से क्षमा मांगकर कहने लगा, मैंने अभिमान में आकर तुम्हारी परीक्षा की है सच्ची माता मुझे मुआफ कर दो, यह सुनकर माता के मन्दिर से अवाज़ आई तूं ने मेरे भक्त को अति कष्ट दिया है, मैं तुम जैसे पापी को दर्शन नहीं दे सकती, अकबर ने कहा माँ मैं एक छिन मात्र तुम्हारा पुत्र हूं, और तुम्हारी भेंट सवा मन सोनें का छत्र हाथी पर उठा कर देहली से नांगे पाँव से तेरे दर्शन को आया हूं, मेरी भंट स्वीकार करो, माता की शक्ति से वह छत्र पृथ्वी पर गिर पड़ा, और गिरते ही अष्ट धातु का हो गया, ना वोह पीतल रहा, ना वोह सोना, ना वोह चांदी का रहा, न सिलवर रहा, न वोह तांबा ही रहा सब धातों को मिला कर अष्ट धातू का बन गया, अकबर

ने कहा हे सची माता अब मैं तुम्हारी शर्ण में आ गया हूं अब तो चाहे मेरे प्राण भी चले जायें मगर मैं तुम्हारे दर्शन किये बिना वापस नहीं जाऊंगा, माता जी ने दयावान होकर मन्दिर से दूसरी आवाज़ लगाई और कहा हे अकबर मैं तुम्हारे गुनाह एक शर्त पर मुआफ कर सकती हूं तुम मुझे वचन दो कि मैं आजसे माता के किसी भक्त की प्रीक्षा नहीं लूंगा, अकबर ने कान पकड़ कर माता जी से प्रार्थना की कि हे सच्ची माता मैं आजसे लेकर तुम्हारे किसी भक्त की कभी परीक्षा नहीं करूंगा, अब मुझे मुआफ करके मेरी भेंट स्वीकार करो, माता जी की शक्ति द्वारा फिर वही छत्र उसी तरह शुद्ध स्वर्ण का बन गया, अकबर ऐसा चमत्कार देख कर और भी असचर्ज हुआ, मय्या जी ने अकबर पर दया करके उसको प्रत्यक्ष दर्शन देकर निहाल कर दिया, अकबर ने अपनी राजधानी में जा कर यह ढौंडी पिटवा दीकि आज से माता के किसी भक्त को किसी किसम का कोई कष्ट न दिया जाये, माता जी की महिमा का यही प्रचार कोने कोने में फैल गया, दूर दूर से प्रेमी भक्त श्रद्धा पूर्वक से माता जी के दर्शन को आने लगे, यह मेला चेत असूज के नवरात्रों में लगता है, और श्रावन अष्टमी को भी भक्त आतेहैं,कुछ समय लोग झोटे की बली ज्वाला जी के भवन में देते रहे परन्तु कुछ समय के बाद बुद्धिमानों ने विचार किया कि माता जो ने तो उस समय

श्री नैना देवी जी की गुफा

जल की छबीलें प्रेमी भक्तों ने लगा रखी हैं मन्दिर के साथ ही सब से बड़ा लंगर मन्दिर कमेटी श्री नैना देवी की ओर से आता है, इसके साथ ही दूसरा लंगर प्रबन्ध सेवा संमती महाबीर दल पंजाब की ओर से होता है। यह दोनों लंगर श्रावण अष्टमी को एकम से लेकर नौमी तक दिन रात चालू रहते हैं।

यह गुफा मन्दिर को जाते ही बायें हाथ डिसपेंसरी के निकट बड़े तलाब के लागे गवर्नमेंट हिमाचल प्रदेश की ओर से जो सरायें बनी हुई हैं, उसके पास ही जरा सा आगे जा कर दहिने हाथ में श्री नैना देवी जी की सुन्दर गुफा है,इस गुफा में महावीर जी के विशाल दर्शन होते हैं,पहिले यह गुफा विरान पढ़ी थी,अब स्वामी श्री कृष्णा नंद जी ने प्रेमी भक्तों में प्रचार करके इस गुफा का बहुत सुधार कर दिया है।

अब गुफा में जाने वाले मार्ग को शुद्ध साफ करके गुफा में लाईट का प्रबन्ध भी करदियाहै,इस गुफा का दर्शन करने बहुत से प्रेमी भक्त जाते हैं दर्शन करके जीवन सफल करें। निसचे का फल प्राप्त होता। बोल साचे दरबार की जै॥

कांगड़े वाली माता जी की अमर कथा

एक समय का वृतान्त है कि कलयुग ने अपना बड़ा जोर दिखाया संसारमें पापों का घोर अंधेरा छाजानें कर कांगड़े

में काल पड़ गया, और नदी में हढ़ की तरह बहुत जोर की कांग आई इसलिए बहुत से प्रेमीभक्तों ने मिलकर पुन्यदान करते हुए माता जी का जगराता तथा हवन यज्ञ करवाया जिस प्रकार श्री दुर्गा माता जी ने प्रकट होकर प्रमी भक्तों को प्रत्यक्ष दर्शन देकर निहाल किया, भक्तों ने ज माता जै माता के नाम की धुन लगा कर माता जी का जाप किया, माताजी ने प्रेमी भक्तों को कहा इस जगह में सती के स्तन गिरे थ इसलिए यहां पर मैं ब्रजेशवरी देवी के रुप म प्रकट होकर भक्तों की रक्षाकरूंगी तुम अपनी श्रद्धाअनुसार यहां पर मेरा मन्दिर बनवादो, काल तथा हड़ से बच जाने पर इस शहर का नाम ही कोट कांगड़े के नाम पर प्रसिद्ध हो गया, और यहां प्रेमी भक्तों न अपनी श्रद्धा अनुसार माता जी का मन्दिर त्यार करवा दिया, इस मन्दिर में मय्या जी के दर्शन करने को बहुत प्रेमी भक्त जाते हैं यहां चेत और असूज के नवरात्रों में बड़ा भारी मेला होता है यह मन्दिर कोट कांगड़े वाली मय्या के नाम पर प्रसिद्ध है इस मन्दिर की चारों ओर की प्रकरमा में श्री संतोषीमाता के दर्शन हैं अष्टभुजी माता के विशाल दर्शन हैं। बिराही देवी, खप्पर योगनी जालपा देवी, श्रीगणेश जी भदर काली, महां काली, काल भैरों, भगवान विष्णु, राधा कृष्ण, सीता राम लक्षमण, शिव पारवती आदि देवताओं के दर्शन होते हैं, इस मन्दिर में एक तारा देवी जी का मन्दिर है जो भुचाल आने पर भी नहीं गिराथा यहां पर जैसी जैसी मनो

कामना करते हैं वैसा २ फल मिलता है, सर्व स्थानों के दर्शन करके यात्रा सफल करो निसचे का फल प्राप्त होता है। बोल साचे दरबार की जै ॥

चिंतपुरनी माता जी की अमर कथा

कलयुग के भयानक समय की बात है कि देश में जालमों के जुलमों का घोर अंधेरा छा गया था, गऊ हत्या के पाप को देखकर एक पं० माई दास हुआ है जिसने माता जी से प्रतिज्ञा कर ली है कि सर्व संसार की चिंता दूरकरने वाली माता चिंतपूरनीजी मेरे मन में सिर्फ देश भक्ति गऊ गरीब की रक्षा करने की आशाहै जिस से पाप का नाश और धर्म का प्रकाश हो, ऐसा वरदान देकर देश में सुख शान्ती की भावना पैदा करो, माताजीने रात के समय पं० माईदास को सपने में दर्शन दिये और भक्तको कहा तुम किसी प्रकारकी चिंता मत करो मैं जुलम जालमों का नाश, धर्म की रक्षा करूंगी, इस जगह पर सती के चर्ण अंस गिरे थे इसलिए मैं इस जगह चिंतपूरनी के रूप में प्रकट होकर सर्व संसार की चिंता दूरकरूंगी, तुम अपनी शर्द्धा अनुसार यहां मेरामन्दिर बनवा दो तुम्हारे सर्व कार्य भगवती की कृपा द्वारा सिध्द हो जाएंगे। पं० माई दास भक्त ने अपनी शर्धा अनुसार उस जगह माता जी का छोटा सा मन्दिर बनवा दिया, माता जी की शक्ति भक्ति की महिमा दूर दूर तक फैल गई, फिर प्रेमी भक्तों ने मिल कर माता जी का विशाल

मन्दिर त्यार करवा दिया,एकशम्बू नामिक भक्त ने अपनी जबान काटकर माता जी के चरणों में अर्पन कर दी, माता जी की शक्ति दुआरा उस भक्त की जबान फिर ठीक हो गई जो जबान शम्बू भक्त ने काट कर माता जी के चरणों में अरपन की थी उसके दर्शन मन्दिर चितपुरनी में अभी तक होते हैं, शक्ति जी की महिमा का प्रचार बहुत दूर दूर तक फंल गया, माता चितपुरनी के मन्दिर को हुशियारपुर से सड़क जाती है मोटरों का अडा भरवाई है, इस जगह से माता जी का मन्दिर सिर्फ दो मील की दूरी पर है यहाँ पर असूज,चेत के नवरात्रों में मेला होता है सबसे बड़ा मेला श्रावण अष्टमी का होता है। प्रेमी दूर दूर से आकर शानदार झंडे झुला कर मन्डलियों के साथ दुर्गा के दर्शन करने हैं। यज्ञा, हवन, पुन्न दान करते हैं, ठडे जल की शबीलें लगाते हैं, मय्या को भेंट चढ़ा कर तरह २ की मन इच्छा फल प्राप्त करते हैं, भक्त जन अनेकों दुर्गा की मूर्तियें बना कर मन्दिर की शोभा को बढ़ाते हैं निसचे वाले भक्तों को फल प्राप्त होता है। बोल साचे दरबार की जय ॥

मनसा देवी जी का अमर कथा

माता मनसा देवी जी का मन्दिर चण्डीगढ़ मनी माजरा के पास है।इस जगह सती का मस्तक गिराथा,इसलिए इस मन्दिर का नाम मनसादेवी के नाम पर प्रसिद्ध है,जब हिन्दु

स्तान पर अकबर बादशाह का राज्य व मुसलमानों का जोर था उस समय पहाड़ो राज राजपूत जागोरदार भी थ जिन को जगीर का मामला सरकार को देना पढ़ता था, एक समय फसल बहुत कम हुई सरकार ने रुपयें मांगे और जगीरदारों ने कहा इस साल फसल बहुत कम हुई है, मामला अगली फसल पर ले लेना, इस झगड़े में सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भट कवि भक्त गरीब दास ने राजपूतों को निरदोष जान कर उन की सहायता के लिए देवी की अराधना दुर्गा पूजा, चण्डी पाठ, हवन यज्ञ किया जिसके कारण माता मनसा देवी जी ने प्रकट होकर प्रत्यक्ष दर्शन दिये तथा वरदान देने को कहा, भक्तों ने जै जै कार करते हुए कहा माता जी आर्शीवाद देकर अन्तरध्यान हो गई। मुकदमा जीतने पर भक्तों ने वहां माता जी का मन्दिर बनवा दिया। भक्तों को मनसा पूर्ण होने पर उसका नाम मनसा देवी के नाम पर प्रसिद्ध हो गया। एक रोज महाराजा पटियाला को माता मनसा देवी जी ने रात को सपने में दर्शन दिये और कहा चंडीगढ़ मनी माजरा के पास में प्रकट हुई हूं, तुम्हारी हर प्रकार से रक्षा करूंगी, तुम मेरा यहां मन्दिर बनवा दो। महाराजा पटियाला ने भी उसी समय दूसरा मन्दिर मनसा देवी में त्यार किया। यह दोनों मन्दिर मनसा देवी के नाम पर प्रसिद्ध हैं। और चेत के नवरात्रों में यहां बड़ा भारी मेला होता है। महाराजा पटियाला को चण्डी देवी दुर्गा महाकाली

जी का वर है कि तुम मेरी पूजा करते रहो तुम्हारी हर मैदान में जीत होगी। महाराजा पटियाला ने पटियाले शहर में भी देवीजी का विशाल मन्दिर बनवा रखा है जो अब भी शेरां वाले गेट पटियाले में मौजूद है। भक्तों के सर्व मनोर्थ माता निश्चय पूर्ण करती है। बोल साचे दरबार की जै।

श्री बाला सुन्दरी माता जी की अमर कथा

एक बनियां सेठ जिला मुजफर नगर यू.पी. साईड से नमक खरीद कर लाया करता था, तो पंजाब साईड में फरोखत किया करता था, ईश्वर की भक्ति में लीन रहता था, इसी तरह एक समय नमक खरीदकर लाया तो अबदुल पुर, जगाधरी, अम्बाला तथा नाहन रयासत की तरफ नमक बेचता बेचता त्रलोकपुर में पहुंच गया, उसी नमक में से श्री बाला सुन्दरी माता जी ने प्रकट होकर उसको प्रत्यक्षदर्शन देकर प्रसंन किया, माता जी की कृपा से वहां पर उसकी बिकरी भी बहुत हुई, रात को माता जी ने उसको सपने में दर्शन भी दिया और दया रूप होकर माता जी ने कहा, हे भक्त तू जहां अपनी शर्धा अनुसार मेरा मन्दिर बनवा दे मैं तुम्हारे मन के सकल मनोर्थ पूर्ण करूंगी, भक्त ने माता जीं के कहने से वहां त्रलोक पुर में माता जी का छोटा सा मन्दिर बनवा दिया, दिन-दिन माता जी की महिमा बढ़ने लगी प्रेमी भक्त दर्शन करके पूजा पाठ हवन, यज्ञ करवाने

लगे, माता जी की महिमा सुनकर नाहन रयासत वाला महाराजा भी माता जी के दर्शन को आया, और उसने काफी रुपया खर्चकरके वहां पर माता जी का सुन्दर भवन त्यार करवा दिया जो मन्दिर त्रलोकपुर वाली माता के नाम से प्रसिध है जो भक्त शर्धा से आते हैं, माता उन के सर्व मनोर्थ निसचे पूर्ण करतीहै,बोल साचे दरबार की जै।

बाबा जित्तो और बुआ बाल कन्या जी के

झिड़ा स्थान की अमर कथा

वैष्णों देवी का एक भक्त बाबा जित्तो,जम्मू रियासत कटड़ा वैष्णों देवी के पास धार गांव में हुआ परन्तु वैष्णों माता का उपासकथा। गांव के 12 कोस के फासले पर इस की खेती थी। बाबा जित्तो भक्त हर रोज अपनी खेती का काम करके रात को घर आकर भोजन करताथा और दुर्गा माता की भक्ति में लीन रहता था। किसी जीव पर वार करना अच्छा नहीं समझता था। इसकी भगती प्रेम देखकर एक रोज रात के समय में वैष्णों माताजीने इसको सुपने में दर्शन दिया, और माता जी ने जित्तो भगत को कहा कुछ वरदान मांगो। यह सुनकर भगत ने कहा आप के प्रत्यक्ष दर्शन करने चाहता हूं। माता जी ने कहा हो जायेंगे, और कुछ मांग।भक्त ने कहा सन्तान नहींहै और गांव में जल की बहुत कमी है, माता जी ने कहा तुम अपने घर में जा कर

भंगूड़ा लगाओ तो तेरे घर में मेरे स्वरूप की कन्या प्रगट होगी और उसी रोज जल की कमी भी पूरी हो जायेगी। जो इस फुहारे के नीचे स्नान करेंगे उनके सर्व कष्ट दूर हो जायेंगे। भगत ने प्रणाम किया और माता जी बरदान देकर अन्तरध्यान हो गये।

सुबह हुई तो भक्त ने भंगूड़ालगाया तो मग्घेर चौदस के दिवस वैष्णों देवी कन्या के रूप में बाबा जित्तो के घर भंगूड़े में प्रगट हुई, जब भक्त ने सूर्यमुखी कन्या का दर्शन किया तो उसीसमय गांव के पास ही दुर्गा की शक्ति से सब निर्मल जल के फुहारेचलने लगपड़े।यहां स्नान करने से सब कष्ट दूरहोजाते हैं।कुछ समय बाद कन्या 12वर्ष की हुई तो गांव से 12कोस खेत में रोजाना पिता केलिए भोजन लेकर जानेलगी जब खेत पकगये तो कार्तिक केमहीने चावलों की फसल त्यारहुई तो लुटेरों ने आकर बाबाजीको लाठियों से बहुत मारा और झोने की बोरियें छीनकर ले गय, भक्त ने दुर्गा को यादकिया,तो माताजी क्षण में शेर पर सवार होकर सामने आगई,तो भक्त को कहनेलगी हेभक्त तुम्हारी ऐसी दशा क्यों है?भक्त ने कहा लुटेरे मुझे मार कर मेरा अनाज छीनकर लेगये हैं।दुर्गा ने कहा तुम कहो तो दुष्टों को अभी उल्टे पाँव वापस मगाऊं। भक्त ने कहा वापस नहीं मंगाना चाहिये। माता जी ने कहा क्या चाहते हो,भक्त ने कहा मैं चाहताहूं जो जीव मेरे अनाजकोखाये वो और उसकीसंतान

खुद यहाँ जाकर अपना दोष प्रगट किया करे। माता जी ने कहा ऐसा ही होगा, तुम्हारा अनाज खाने वालों की सारी संतान यहाँ हर वर्ष आकर अपना दोष प्रगट किया करेगी और जो श्रद्धावान यहाँ आकर निसचा करेंगे, उनके सर्व मनोर्थ पूर्ण हुआ करेंगे। भक्त को दर्शन देने का वचन पूरा करते हुए माता जी चले गये बूआ बाल कन्या बाबा जी के लिए भोजन लेकर आई तो बाबा जी की हाबत सुनकर विरलाप करने लगी। बाबा जित्तो जी प्रलोक सिधार गये, और बुआ बाल कन्या ने पिता के वियोग में अपना शरीर भी त्याग दिया।

गांव वालों ने दोनों का संस्कार किया। अब यहाँ प्रति वर्ष कार्तिक शुदि पूर्णमाशी को बड़ा भारी मेला लगता है जिन्हों ने बाबा जी का अनाज छीना था उन की सारी संतान यहाँ आकर अभी तक जड़ीयां खेलकर, सिर मारकर अपना दोष प्रकट करती हैं, और जिन्होंने तांदलों की फसल छीनी थी, उसके बदले चावल खिचड़ी का भण्डारा बनाकर लोगों को बांटते हैं, इस स्थान का नाम झिड़ी है। जम्मू से ७ कोस है नजदीक शामांचक गाँव है। प्रेमी श्रद्धा से आते हैं। वंणों माता उनकी आशा पूर्ण करती है, निश्चय का फल मिलता है। बोल नाचे दरबार की जय॥

जगराते में बोलने वाली

महारानी तारा देवी की अमर कथा

महारानी तारा और इस को बड़ी बहिन रुकमन यह दोनों बहिनें दक्ष राजा की बोटीयें थीं, श्री तारा देवी को बचपन से ही श्री दुर्गा माता के चरणों की लगन थी, यहां भी माता का सत्संग तथा जागा होताथा वहीं जाकर माता जो की महिमा सुनने का बड़ा प्रेम था। रुकमन और तारा इन दोनों बहिनों ने आपस में एकादशी का व्रत रखने का नियम किया हुआ था, एक रोज एकादशी के दिन रुकमन ने फलोहार की बजाए बाज़ार से लेकर तला हुआ मास खा लिया, इस बात का तारा को पता लगा तो तारा ने रुकमन को श्राप दे दिया कि जा नीचनीयें तूने व्रत खण्डत किया है। इस लिए तुझे किरली की जून मिलेगी, रुकमन ने कहा हां बहिन मेरे से बड़ा भारी पाप हो गया है। जो मैंने व्रत खण्डत कियाहै मगर तूनेमुझे किरलीहोने का जो श्रापदिया है, इस से मेरी मुक्ति कैसे होगी, तारा ने कहा पांच पांडव अश्वमेध यज्ञ रचायेंगे, उन के भण्डारे में सर्प गिर पड़ेगा, तू सब की जान बचाने के लिए उन को दिखाई दे कर उस भण्डारे में अपनी जान पर खेल जायेंगी,तो सब तेरी मुक्ति होगी। इसप्रकार तारा के श्राप से रुकमन किरली की जून में चली गई और अयुध्या के राजा हरिचन्दर से तारा की

हो गई। उधर श्री दुर्गा माता जी हस्तनापुर पहुंच गई। माता जी ने लंगर बीर को कहा कि पांडवों को खबर कर दो कि आप के शहर में माता जी आई हैं, दर्शन दे जाओ, दर्शन ले जाओ। माता का संदेश सुन कर पांडों माता जी की शरण में आये, दर्शन करके अति प्रसन्न हुए। माता जी ने आशीर्वाद दिया, पाँडों ने कहा माता जी हमें कोई टहिल सेवा का अवसर दीजिये, माता जी ने कहा मेरा भवन त्यार करवा दो पांडों ने उसी समय माता का भवन त्यार करवा दिया वह मन्दिर हस्तिनापुर मेंहै। पाँडों ने कहा माता जी इस मन्दिर में निवास करो। माता जी ने कहा पहले तेतीस करोड़ देवताओं को पाती भेज कर अश्वमेध यज्ञ रचो फिर में इस मन्दिर में निवास करूंगी, पाँडों ने उसी समय तेतीस करोड़ देवताओं को पाती भेज दी, जब दूत पाती लेकर गया तो सब से पहले उस को पांडवों का गुरू दुरबाशा ऋषी मिला। उस ने दूत से पूछा तुम कहां जा रहे हो, दूत ने कहा पांडवों ने अश्वमेध यज्ञ रचाया है, में तेतीस करोड़ देवताओं को खबर देने जा रहा हूं और आप भी यज्ञ में भाग लेने को शामिल होना दुरबाशा ऋषि ने कहा अगर पांडवों ने सिरफ मुझे पाती भेजी है तो में यज्ञ में जाऊंगा, अगर तेतीस करोड़ देवता यज्ञ में शामिल हुए तो मैं नहीं आऊंगा। यह सुनकर दूत तेतीस करोड़ देवताओं को खबर देकर पाँडवों के पास आ गया, और दुरबाशा रिषी का पंगाम भी पांडवों को सुना दिया।

जब तेतीस करोड़ देवता यज्ञ में शामिल हुए, तो उन्होंने पांडवों से पूछा कि आप का गुरू यज्ञ में क्यों नहीं पहुंचा ? पांडवों ने कहा हमने तो उस को भी खबर कर दी है मगर वोह अभिमान के कारण यज्ञ में शामिल नहींहुआ । तेतीस करोड़ देवताओं ने माताजी को नमस्कार करके विधीपूर्वक यज्ञ की त्यारी करदी, पूजा, पाठ, धूप, दीप, आरती तथा हवन यज्ञ हुआ,जब भण्डारा बन रहाथा तो दुरबाशा रिषी के मन में बड़ा भारी क्रोध उत्पन्न हुआ कि यज्ञ में मुझे क्यों नहीं शामिल किया गया। इस लिए दुरबाशा रिषि ने पंछी का रूप धारण करके उस भण्डारे में सर्प फैंक दिया, जिसका किसी को कुछ पता ना चला।

भण्डारे में सर्प गिरता हुआ एक किरली ने देखा,और उस ने मन में विचार किया कि आज समय मिला है कि परउपकार करके इनसबकी जानबचाऊं और साथहीअपना भी कल्याण हो जायेगा। जब भण्डारा त्यार हो गया तो सब को दिखाई दे कर किरली उस भण्डारे में गिर पड़ी सभी देखकर कहनेलगे इस नीच किरली ने भण्डारा खराब कर दिया है अब यह खाने के काबिल नहीं रहा।किरली को शराप दे दीया। जब कड़ाहे को उलटने लगे तो उस भण्डारे में से बड़ा भारी सरप निकला, सभी देख कर कहने लगे यह किरली तो कोई माता की भगवती थी, आज जिस ने सब की जान बचाई है, नहीं तो आज खीर खा कर सब

मृत्यु हो जाती, आओ सभी मिलकर किरली की सहायता के लिए माता जी के चरणों मे प्रार्थना कीजिये, और अपने श्राप को वापस लीजिये।

माता की कृपा और सब की आर्शीवाद द्वारा किरली की चौरासी लाख जूनें खत्म हो गई और उस किरली ने राजे सप्रंश के घर जन्म लिया, राजा ने जोतषियों से लड़की के लगन पूछे जोतषियों ने कहा यहलड़की आप पर बड़ा भारी गृह प्रकट करने वाली है, इसको मार देना चाहिये। राजा ने कहा लड़की को मारने का बड़ा भारी पाप लगेगा, कोई और विधि बताईये, जोतषियों ने कहा लकड़ी का सन्दूक लेकर, ऊपर सोने चांदी तथा हीरे मोतियों की जड़त करवा के,इसको उसके बीच बन्द करके नदी में रुड़ा दियो फिर आप को कोई पाप नहीं लगेगा। राजा ने ज्योतषियों के कहने से वैसा ही किया, यह सन्दूक रुढ़ता २ स्नान करते हुए एक कांशी के पण्डित को नजर पड़ा। जब पण्डित इस सन्दूक को पकड़ने लगे तो सन्दूक झूंचे पानी में चला जाये और पण्डित बाहर आ जाये तो सदूक फिर नदी के किनारे पर आ जाये इतने में एक भील भी दरया पर आ गया। पण्डित ने भील को कहा वोह देख स्वर्ण चांदी से भरा हुआ संदूक रुढ़ता आ रहा है इसको मिलकर बाहर निकालें, जो कुछ भी होगा सो दोनों आधो आध कर लेंगे। दोनों मिलकर उसे पकड़ने लगे तो संदूक भील के हाथ आा गया, जब सन्दूक खोल कर

देखा तो बीच में सुन्दर सरूप कन्या के दर्शन हुए। स्वर्ण चांदी का सन्दूक पण्डित ले गया बीच का माल और कन्या को भील ले गया, क्योंकि इस के घर सन्तान नहीं थी। घर जा कर भीलन को कहने लगा देख हमारे संतान नहीं थी, माता जी ने दयाल हो कर यह कन्या हमें बखशी है, ले इसे गोद में पा ले, जब भीलन ने कन्या को गोद में ले लिया तो माता की शक्ति से भीलन के स्तनों में दूध आ गया। बोल साचे दरबार की जय ॥

जब यह कन्या वर प्राप्ती हुई तो इस की शादी राजे हरिचन्दर के शहर में हरिजनों के घर हुई। पहलेजन्म में इस का नाम रुकमन था, और अब दूसरे जन्म म इस का नाम रुको के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जब रुको का सास बृद्ध हो गई तो रुको ने कहा माता जो अब आप से इतना काम नहीं हो सकता, इस लिए आप मुझे काम वाले घर दिखादो मैं वहां का काम कर आया करूंगी। अब रुको काम पर जाने लग पड़ी। एकदिन राजे हरिचन्द के घर गई तो माता की शक्ति द्वारा तारा ने इसको पहिचान लिया क्योंकि इस में माता की शक्ति थी। तारा ने कहा आ रुको बहन मेरे पास बैठ रुको ने कहा बहन तू महारानी तारा है, और मैं एक नीच जाति की स्त्री तेरे पास कैसे बैठ सकती हूं, तारा ने कहा पिछले जन्म में तू मेरी बहिनथी, वर्त खण्डन करने से इसके पहिले तुम्हें किरली की जून मिली है और अब भी तेरा

जन्म राजे के घर का है परन्तु सराप के कारण तुम्हें नोच जाति में हो रहना पड़ा है, यह तुम्हारी किस्मत को बात है।एक रोज माता के मन्दिर में जागा हो रहा था जागे में बड़ी मीठो धुन से माता के भजन गाये जा रहेथे जो रुक्मो के मन को बहुतहो सुन्दर लगते थे। रुक्मो ने तारा से पूछा आज माता के मन्दिर में ढोलकियों छेनों की धुन से बड़े सुन्दर भजन गाये जा रहे है क्या बातहै। तारा ने कहा रुक्मो रात का माता के मन्दिर में जागा हो रहा है, माता बड़ी शक्ति शाली है भक्त श्रद्धा के साथ माता की पूजा करते हैं माता निश्चय वाले भक्तों के सगल मनोर्थ पूर्ण करती है। एक रोज रुक्मो ने भी माता के चरणों म प्राथना की, कि हे जगत जननी मय्या मुझे भी एक पुत्र देकर मेरी गोद भी हरीभरी कर दो मैं तेरा जगराता कराऊंगी। समय पाकर रुक्मो के घर भी जगदम्ब मय्या ने लाल बखश कर इसको गोद भी हरी भरी कर दी।

समय पाकर लड़का पांच वर्ष का हो गया। रुक्मो को माता का जागा करवाना भूल गया, लड़का बीमार हो गया उसको फूलाँ वाली माता निकल पड़ी, एक रोज रुक्मो तारा के घर गई तो तारा ने कहा बहिन अब तू मेरे साथ कभी दिल की बात चीत नहीं करती क्या कारण है रुक्मो ने कहा बहन मेरा लड़का पांच छः रोज से बीमार है, उसके जिसम पर फिनसियें निकलपड़ीहैं, तारा ने कहा तू कोई सुखना तो

नहीं करी हुई, याद कर मत तुम से कोई भुल हो गई हो। तारा की यह बात सुनते ही रुको को जागे की बात याद आ गई और कहने लगी, मैं बेटे का जागा सुखा हुआ था, अब माता मेरे बच्चे को राजी कर दे तो मैं माता का जागा ज़रूर करवाऊंगी। जब रुको ने माता जी के आगे प्रार्थना करी तो लड़का राजी हो गया। रुको माता जी के मन्दिर में जा कर कहने लगी मैंने माता का जाता करवाना है, पण्डित ने कहा सवा पांच रुपये जागे की भेटा दे जाओ हम तुम्हारे नाम का जागा करवा देंग, यह बात तारा ने सुनी तो कहने लगी, जागे इस तरह सम्पूर्ण नहीं होते, माता की चौंकी अपने घर में बुला कर जगराता करवाना चाहिए। रुको ने जागा करने वालों को कहा आये मंगलवार को हमारे घर में जगराता करना। यह सुनकर सभी कहने लगे हम नीचों के घर में जाकर जागा नहीं करेंगे और नहीं कोई जागा सुनने जायेगा आखर यहफैसला हुआ यदि महारानी तारा जागे में जायेगी तो सब लोग जागे में आएगें यदि महारानी तारा जागे में ना आई तो कोई भी जागे में नहीं आएगा यह बात सुनकर रुको तारा के पास गई और कहने लगी कि सब लोक कहते हें कि महारानी तारा जागे में ना आई तो जागे में कोई भी नहीं आएगा। तारा नें रुको के जागे में जाना स्वीकार कर लिया, रुको ने यही सन्देश सबको सुना दिया कि महारानी तारा जागे में आयगी। यह बात सैने बाई ने हरिचन्द्र को सुना दी

कि आज रात को भीलों के घर जागा होवा है जिसमें तेरी तारा भी शामिल होगी। राजा कहने लगा यह बात झूठी है में नहीं मानता कि मेरी तारा भीलों के घर जागे में जायेगी नाई ने कहा आप उंगली को थोड़ा सा चीरा लगा लो आप को नींद नहीं आएगी। राजा ने वैसा ही किया। अब उधर जागे का टाईम हो रहा था, तो इधर राजा को नींद नहीं आ रही थी, तारा ने माता जी के चरणों में बेनती करी कि हे माता जी राजा को ठण्डे झोले दो जिस से राजा को नींद आ जाये, और मैं अपने किये वचन को पूरा करने के लिए तेरे जागे में भाग ले सकूं, इतने में माता की कृपा से राजे को नींद आ गई तारा शीशे के रोशनदान द्वारा रस्सा बांध कर महिल के नीचे आ गई। अन्धेरी रात और जल्दी के कारण तारा का रेशमी रुमाल और पैर का कंगन रास्ते में कहीं गिर गया लेकिन तारा जागे में पहुंच गई।

पीछे एक चोर आया जिस ने तारा का रुमाल, और पैर का कंगन उठा लिया, इतने में राजा की नींद भी खुल गई। राजा ने देखा तारा महिल में नहीं, राजा रानी को भाल के लिए महिल के नीचे आया आगे इसको एक चोर मिला, राजा ने कहा क्या हाल है? चोर ने समझा यह भी कोई मेरा साथी कावा ही होगा चोर ने राजा को कहा पहिले मिलने तो ठीक था, यहां से एक कोई बड़े घर की स्त्री स्वर्ण चांदी के जेवरों से छन छन करती हुई चली गई है, यह देख

उसका रुमाल और कंगन मेरे हाथ आया है, राजा ने कहा पाँच मोहरें मेरे से तूं ले ले यह रुमाल और कंगन मुझे दे दो, चोर ने मोहरें ले लीं रुमाल व कंगन राजा को दे दिया राजा तारा की निशानियें लेकर जहाँ जागा हो रहा था वहाँ पहुंच गय । जब ज गे की समाप्ती होने का समय आया माता की आरती और अरदास हुई प्रसादि बांटने लगे तारा ने प्रसाद लेकर झोली में पा लिया सभी कहने लगे तारा ने प्रसादि क्यों नहीं खाया। जब तारा प्रसादि खायेगी तो सब भक्त प्रसादि खायेंगे अगर तारा प्रसादि नहीं खायेगी तो कोई भी प्रसादि नहीं खायेगा तारा ने कहा यह प्रसादि मैंने महाराज के लिए रखा है मुझे और प्रसादि दो में आप खाऊंगी फिर दुबारा प्रसादि तारा को दिया तो उस ने आप खा लिया फिर सभी भक्तों ने प्रेम पूर्वक से माता का प्रसादि खा लिया जब तारा बाहर आई तो राजा ने तारा को कहा तूने नीचों के घर का प्रसादि क्यों खाया है, इसलिए में तुझे घर में ना रखूंगा। तूने धर्म भ्रष्ट कर दिय है तारा कहन लगी मैंने तो किसी से भी लेकर प्रसादि नहीं खाया राजा ने कहा तूं ने मेरे देखते२ अभी कड़ाह छोले लिएहैं, यह देख प्रसादि तो अभी तक भी तेरी झोल में पड़ा हुआ है जब तारा ने झोली दिखाई तो माता की शक्ति से चम्बे गुटे और गुलाब के फूल बन गए, पानों के पत्ते कच्चे चावल और सुपारीयें बन गई।

राजा देखकर हैरान हो गया और कहने लगा माता

का मुझे भी कोई चमत्कार दिखा। तारा ने कहा घर चलो में आपको माता का ज़रूर चमत्कार दिखाऊंगी, तारा ने बगैर माचस के ज्वाला मय्या की शक्ति द्वारा अग्नी जला दी, राजा देखकर और भी अश्चरज में हुआ, फिर राजा ने कहा मैं माता के साक्षात दर्शन करने चाहता हूं, तारा ने कहा रोई दास बेटे की बली देने से माता के दर्शन हो सकते हैं, राजा ने खंजर से रोई दास का सीस काट दिया, तब अष्टभुजी माता शेर पर सवार होकर आ गई प्रत्यक्ष दर्शन देकर रोई दास को सावधान कर दिया। माता की शक्ति का चमत्कार देख कर राजा हरि चन्द्र भी माता के चरणों का सेवक बन गया और तारा को कहने लगा कुछ वरदान मांगो तारा ने कहा जितना राज तुम्हारा है उतना ही मेरा है और क्या मांगूं। हां यदि आप बहुत दयाल हो तो मेरी माता का मन्दिर बनवा दो।

राजा ने उसी समय माता का मन्दिर त्यार करवा दिया। यह मन्दिर अयुध्या में है, तारा रानी की कथा पढ़ने व सुनने का बड़ा भारी महातम है, जिस जागे में तारा की कथा न पढ़ी जाए वह जागा सम्पूर्ण नहीं हो सकता निसचा वाले भक्तों के सर्व मनोर्थ माता निसचे पूर्ण करती हैं। बोल साचे दरबार की जय।

अथ श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।।नमो नमो अम्बे दुखहरनी ।।१।।
निरंकार है ज्योती तुम्हारी। तिहू लोक फैली उजयारी।।२।
चद्र ललाट मुख महा विशाला ।। नेत्र लाल भृकुटी
विकराला ।३।। रूप मात को अधिक सुहावे।। दर्स कर्त
जनअति सुख पावे ।।४।। तुम संसार शक्ति है कीना ।।
पालन हेत अंनधनदीना ।। ५ ।। अन्नपूर्ना हुई जगपाला
तुमहो आदि सुंदरीबाला।।६।।प्रलयकाल सब नाशन हारी ।।
तुम गोरी शिव शंकर प्यारी ।।७।। शिव योगी तुम्हारे गुण
गावें ।। ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित्त ध्यावे।।८।।हर सरस्वती का
तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उवारा ।।९।। धरा रूप
नरसिंह का अम्बा।प्रगट भई फाड़ के खम्बा।।१०।।रक्षा कर
प्रहलाद बचाओ। हरनाक्ष को स्वर्ग पठाओ ।।११।। लक्षमी
रूप धरो जग माहीं। श्री नारयण अंग सम ह ।।१२।।क्षीर
सिंधु में करत विलासा। दया सिंधु दीजे मन आसा ।।१३।।
हिंग लाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात
बखानी ।।१४।। मातगी धुमावती माता भुवनेश्वरी मंगला
सुखदाता ।।१५।। श्री भैरवतारा जग तारन,छिन भाल भव
दुख निवारन ।।१६।। केहर वाहन सोहे भवानी,लंगूर वीर
चलत अग्वानी ।।१७।। कर मे खप्पर खड़ग विराजे। जा
को देख काल डर भाजै ।।१८।। सोहे और अस्क्षे त्रिशूला ।।
जाते उठत शत्रु हिय शूला ।। १९ ।। नवों कोट में तुम्हीं
विराजत, तिहूं लोक में डंका बाजत ।।२०।। शुम्भ निशुम्भ
दानव तुम मारे, रक्त बीज संखन संहारे ।।२१।। महिषासुर

नृपमति अभिमानी, जेही अघ भार धरा अकुलानी ।।२२।।
रूप कराल काली का धारा।। सेना सहिततुम तेहो संहारा।।
२३।। परीगाढ़ संतनपर जब जब । भाई सहाय मातु हे तब
तब ।।२४।। आभापुर वासन लोका। तब महिमा सब कहे
अशोका ।।२५।। ज्वाला में है जोति तुम्हारी, तुम्हें सदा
पूजन नर नारी ।।२६।। प्रेम भक्ति से जो जस गावे, दुःख
दारिदर नेड़ नहीं अवे ।।२७। ध्यावे, तुम्हें जो नर मन
लाई, जन्म मरन ते सो छुटिजाई ।। २८ ।। योगी सूर मुनी
कहत पुकारी, योग न होई विन शक्ति तुम्हारी ।। २९ ।।
शंकर आचारज अती तप कीनो, काम-क्रोध जीति सब
लीनो ।।३०।। निशि दिन ध्यान धरत शंकर को,काहु काल
रहीं सुमिरो तुम को ।।३१।। शक्ति रूप को मरम ना पायो,
शक्ति गई तब मन पछितायो ।।३२।। शरनागत हुई कीरत
बखानी, जं जं जै जगदम्बा भवानी ।। ३३ ।। भई प्रसन्न
आदि जगदम्बा, दई शक्ति नहीं कान विलम्बा।।३४। मोको
मात कष्ट प्रति घेरा, तुम बिन कौन हरे दुःख मेरा ।।३५।।
आश। तृष्णा निपठ सतावें रिपु मूरख मोहि अति डर पावे
।।३६।। शत्रु नाश किये महारानी, सुमिरू एक चित तुम्हें
भवाना ।।३७।। करो कृपा हे मात दयाला, रिद्ध सिद्ध के
करहु निहाला ।। ३८ ।। जब लग जिओ दया फल पाऊं,
तुम्हारा जस मैं सदा सुनाऊं ।।३९।। दुर्गा चालीसा जो नर
गावे। सब सुख भोग परमपद पावे ।।४०।। देवी दास शरण
विज जानीं, करहु कृपा जगदम्बा भवानी ।।४१।।

श्री दुर्गा चालीसा समाप्त ।।

आरती श्री दुर्गा जी

जय अम्बे गौरी मय्या जय मंगल मूर्ति जय आनन्द करणी।
तुमको निशदिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिवरी । टेक।
मांग सिन्दूर विराजत टींको मृगमद को।
उज्जवल से दोऊ नैयना चन्द्र बदन नीको।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला कुण्डल पर साजे।
केहर वाहन राजत खडग खप्पर धारी।
सुर नर मुनिजन सेवत तिनको दुःख हारी।
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती।
धूमर विलोचन नयना निशि दिन मदमाती।
चौसठ योगी गावत नृत्य करेत भैरू।
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू।
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी।
मन वांछित फल पावत सेवत नर नारी।
कंचन थाल विराजत कोठि रत्न ज्योति।
श्री मालकेत में राजत कोटि रत्न ज्योति।
दो०—जो अम्बे की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे।

पुनः आरती श्री दुर्गा जी

मंगल की सेवा सुन मेरदेवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े पान सुपारी ध्वजा खोपड़ा ले ज्वाला तेरी भेंट करे सुन जगदम्बा करे न विलम्बा संतन का भंडार भरे। सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्यान करे बुद्धि विधाता तू जग माता मेरा कारज सिद्ध करे चरण कमल का लियो आसरा शरण तुम्हारी आन परे। जब तब पर भीड़ पड़े भक्तन पर तब तब आप सहाय करे। बार २ तै सब जग मोहयो तरुणरूप धरो। माता होकर पुत्र खिलवे कहीं भार्या होकर भोग करे संतन सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे। ब्रह्मा बिष्णु महेश सदा फल लिए भेंट तेरे द्वार खड़े। अटल सिंहासन बठ माता सिर सोन का छत्र धरे। गले शनिश्चर कुमकुम वरणो जमलो कठ हर हुक्म करे। शख, खप्पर त्रिशूल हाथ लिए रक्त बीज को भस्म करे शुंभ निशुंभ पछड़ माता महिषासुर को पकड़ दले। आदित बार अहिकारा राजत अपने जनके कष्ट हरे। कोप होमकर दानव मारे चण्ड सभ चूर करे। तब देखो दया रूप होय पल में संकट दूर करे। सौम्य स्वभाव धरो मोरी माता जनकी अरज कबूल करे। सिंह पीठ पर चढ़ो भगवती अटल भवन में राज करे। दर्शन पाये मंगल गाये सिध साधु कर भेष धरे। ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकर का ध्यान धरे। इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती चवर कुबेर डुलाये रहे जय जननी जय मात भवानी अटल भवन में राज करे।

—०—

०० अरदास ००

माता दे भक्तो ॥ जय देव ॥ माता दयाल होई ए ॥ जय देव
दुध वाले नूं दुध देंदी ए ॥ जय देव ॥
पुत्र वाले नूं पुत्र देंदी ए ॥ जय देव ॥
धन वाले नूं धन देंदी ए ॥ जय देव ॥
मनो कामना पूर्ण करदी ए ॥ जय देव ॥
खुले खुले दर्शन देंदी ए ॥ जय देव ॥
चौंकड़ा वीर, गैहर गंभीर। सुक्की नदी वगावे नीर।
जयकारा निस्तारा। झूलेगी धजा बाजेगा नगारा।
माता नूं सन्तवी सन्त प्यारा। इक मन होके जो माता दा
जैकारा बुलवेगा, सो निहाल होवेगा, बोल साचे दरबार की जै

इति नौ देवीयों की अमर कथा

(पहिला भाग संपूर्ण)

इस के आगे दूसरे भाग में

श्री दुर्गा कीर्तन

चराडी पाठ, आरतीयें, भजन, भेटें

नई नई तर्जों में माता जी के मनोहर कीर्तन पढ़ कर लाभ प्राप्त करें।

ज्यूल फाईन प्रिन्ट्रज़, हाथी खाना, अमृतसर में छपी।

चराडी चमत्कार

श्री दुर्गा कीर्तन

पाठ, आरतीयें, भजन, भेटें

- दूसरा भाग -

उस्ताद कवि :—

मोनधारी संत दरबारा सिंह जी (सतिकर्तार)

कवि व प्रकाशक :—

गुरबखश सिंह 'बान' एन्ड संज

दलजीत सिंह 'दिलबर' गुरदयाल सिंह 'गालिब'
गुरमुख सिंह 'गुलशन' भरभूर सिंह 'आलम'
वचित्र सिंह 'बाज'

सत्यकर्तार पुस्तक भंडार (रजिस्टर्ड)
संगत पुरा लुधियाना, ब्रांच कटड़ा वैष्णों देवी

☐ जग से निराला है तेरा नाम ☐

तर्ज—दुनियां में तेरा है बड़ा नाम (लोफर)

जग से निराला है तेरा नाम।
पूर्ण करती तूं सब के काम। जग....
मेरी बिनती सुन लो मइया, करता मैं तुझे प्रनाम
तेरी पूजा करता अम्बे, है भारत वर्ष तमाम
जग से निराला है तेरा नाम....

सेवक सारे तूने मां तारे।
जो भी आए तेरे द्वारे।
सोए भाग जगादो मेरे।
मेरी आस पुचाए तो तेरे।
गुन गाऊं सुबह-शाम। जग से निराला है तेरा....

शर्द्धा की मैं भेट चड़ाई।
'ज्ञान' की मैं ने जोत जगाई।
मेरा जीवन सफल बनादो।
मेरी नय्या पार लगादो।
पाया मैं तेरे धाम। जग से निराला....

☐ दर्शन पाएं गे ☐

तर्ज—तूं न मिली तो हम जोगी बन जाएं गे
(विक्टोरीया नं० 203)

अम्बे मय्या के,
अम्बे मय्या के हम दर्शन पाएं गे, अम्बे मय्या के।
मय्या की जोती को मन में बसाएं गे। अम्बे... ...

मां मेरी है आदि भवानी,
जिस की जग रही जोत नुरानी
कुदरत की तस्वीर है मय्या,
भक्तों की तकदीर है मय्या।
पूर्ण काम करे मां दिल के,
चलो मय्या के द्वारे मिल के।
महिमा मां की गाते जाना,
जै जै कार बुलाते जाना।
जाके चर्णों में सर को झुकाएं गे। अम्बे... ...

हम मय्या के सेवक सारे,
हम सब मां को लगते प्यारे।
मां वरों की है वरदानी,
भक्त जनों ने शक्ति मानी।
जिस ने मां का नाम ध्याआ,
मन मांगा फल उस ने पाया।
मन मन्दिर में 'ज्ञान' बसाले,
जीवन को तूं सफल बनाले।
लेके मां की शर्न तर जाएं गे। अम्बे... ...

— प्रेमी जै मय्या की बोले —

तर्ज—नी मैं यार मनाना नी, चाहे लोग बोलीयां बोले (दाग)

जीवन सफल बनालो भक्तो, जीवन है यह गहिना
मां का नाम सिमर तर जाना, सेवक बन के रहिना
मैं मां दर जाना एं, प्रेमी जै मइया की बोले 3
मां से फल पाना एं, प्रेमी तन मन अपना घोले 2

दूर दूर से दर्शन करने आए भक्त प्यारे
शर्द्धा भेंट हाथ में ले कर खड़े मय्या के द्वारे
मैं मां दर जाना ए। प्रेमी ज मय्या की बोले... —

मात मिले तो 2 माता जी को दिल का हाल सुनाऊं
माता जी के चर्णों में मैं जीवन सफल बनाऊं
महिमा को गाना एं, 2 प्रेमी जै मय्या की... ...
भेंटा को चड़ाना एं, प्रेमी तन मन अपना घोले 2

मन की आशा पूर्ण करती दुर्गा शक्ति मय्या
विसचे वाले भक्तों की मां पार लगाए नय्या
मैं मां दर जाना एं, प्रेमी जै मय्या की बोले... —

बैठ द्वारे 2 पास मय्या के करूं प्रेम से बातें
आज मिले मेरी मां तो पाऊं मन मांगी मैं दातें
जोती को जगाना एं 2 प्रेमी जै मय्या की बोले 2
जीवन को बनाना एं, प्रेमी तन मन अपना घोले 2

मन मन्दिर में 'ज्ञान' बसा के, जो भी दर पे आए
दुर्गा जी के द्वारे से वह मूंह मांगे फल पाए। मैं मां दर... ...

० मैंने तेरी डोर पकड़ली ०

तर्ज—अब चाहे मां रूठे जां बाबा दाग)

ब मैं आया तेरे द्वारे, मैं ने तेरी डोर पकड़ली
ब मैं पाने दर्स तुम्हारे, मैं ने येही निसचा करली
ने मन में शर्द्धा धरली, आगे बड़ी जुदाई जरली
ोरी छूटे न, टूटे न, जै करली, जै करली। अब......

ुर्गा शक्ति मेरी महा माई, मय्या तेरी मैं जोत जगाई
री महिमा अम्बा जी मैं गाई,तेरी मूरतीया मन में बसाई

रे मां द्वार पर, मैं झुकाया है सर।
री जोती जगे, खूब गंगा वगे।

दास दर आए हैं, भेट को लाए हैं।
मां तुझे दम ही दम, याद करते हैं हम।

सब वूं तारे भक्त प्यारे, मैं ने तेरी डोर पकड़ली
अब मैं बोलूं जै जै कारे, मैं ने येही निसचा करली...

ज्ञान' की मैं ने जोती जगाई, तेरे द्वारे पे धूनी रमाई
हम बालक हैं मां, तुम हो माई, हम सहि न सकेंगे जुदाई
तेरा ध्यान धरूं, तेरी पूजा करूं।
अपनालो मुझे, शर्न लालो मुझे।

ना सहारा मिला, ना किनारा मिला।
झूठा संसार है, नय्या मझधार है।

अब मेरा जीवन तेरे सहारे, मैंने तेरी डोर पकड़ली।
अब मेरीनय्या लाओ किनारे,मैंने येही निसचा करली...

() फल मिलते दरबार से ()

तर्ज—यारी हो गई यार से, लक टुनू टुनू (दो चोर)

फल मिलते, हां फल मिलते
फल मिलते दरबार से, तुम चलो चलो। फल....
आप को काम क्या, झूठे संसार से। फल....

जी त्यार प्रेमी होके दर्स को चले,
है नाम की लीला हो रही दरबार में मय्या के।
जी प्रेमी मां के जाके हैं चर्णों में खले,
जी गूंज रहा जैकारा द्वार में मय्या के।
खिल रहे, हैं सभी, मां के दीदार से।
फल मिलते दरबार से, तुम चलो चलो....

सब ने मिल कर जी है जै जै बोलना,
वरदान हमें है मिलता मां के दर्स के पाने से।
मां कहिती है भक्तो कभी न डोलना,
'ज्ञान' हमे है मिलता मां की जोत जगाने से।
दाम न, कुच्छ लगे, शर्द्धा के हार से।
फल मिलते दरबार से, तुम चलो चलो....

– मइया का मेला –

तर्ज—दुनियां का मेला, मेले में लड़की (राजा जानी)

मइया का मेला, मेले में शक्ति,
शक्ति भवानी अम्बे, नाम उसका।
जीवन सफल बनालो, अच्छे कर्म कमाओ,
ओ प्रेमी, ओ भक्तो सब को पैगाम उसका–
श्रद्धा की लेके भेटा, आए हैं प्रेमी द्वारे
मइया की महिमा गाते, बोलें सबी जैकारे
कैसा मन्दिर सुहाए, खूब झन्डा लहिराए
इनऊंचे पर्वतों में सोहना धाम उसका। मइया -
कहिते हैं सारे उसकी, जगरही निराली जोती
अब भी उसी के नाम की, पूजा है खूब होती
जोत उसकी जगाए, उसे मन से बसाए,
जाप करते प्रेमी सुबा शाम उसका। मइया-
हिरदे में लेके आशा, जो दास बन गया है
बेटा 'ज्ञान' माँ का, ये खास बन गया है
माँ शर्न लगाए, आशा सब की पुजाए
मन मांगे फल देना, येही काम उसका। मइया-

— पर्वत में भवन सोहना —

तर्ज—इक प्यार का नगमा है (शोर)

पर्वत में भवन सोहना, वहां जोत नुरानी है
पूर्ण जो भी आस करे, वो दुर्गा भवानी है

मय्या का लाल है चोला, अर लगी किनारी है
है सीस छत्र साजे, मां सिंह सवारी है
चर्णों में चले गंगा, वो निर्मल पानी है। पूर्ण-

वहां लाल रंग के जी, झन्डे लहिराते हैं
वहां हवन हो रहे हैं, प्रेमी यश गाते हैं
अम्बा के द्वारे की, येही तो निशानी है। पूर्ण-

यह द्वार मय्या जी का, इक साचा द्वारा है
दासों को द्वारे से, मिल जाता किनारा है
जगदाती मां दुर्गे, मय्या वरदानी है। पूर्ण-

शर्द्धा की भेट लीये, वहां प्रेमी जाते हैं
फल 'ज्ञान' मय्या जी से, सब सेवक पाते हैं
शर्द्धा की भेट जा कर, मैंने भी चड़ानी है। पूर्ण-

— मैं रज रज दर्स करां —

तर्ज– कोई शहरी बाबू दिल लहरी बाबू (लोफर)

मां दर्स दिखादे, मेरी आस पुचादे, अम्बे मां
दिल लोच रिहा मेरा, मैं रज रज दर्स करां।
खड़ा सेवक द्वारे, मैनूं ला दियो किनारे
तेरी लग के शर्न मैं तरां। मैं रज रज....

तेरे नाम दी जोत जगावां मय्या।
तेरे दर ते मैं धूनी रमावां मय्या।
प्या दर दर ठोकर खावां मय्या।
तैनूं दिल दा हाल सुनावां मय्या।
लखां सेवक तूं तारे, मैं वी तेरे हां सहारे
तेरी लग के शर्न मैं तरां। मैं रज रज....

दास नूं दर्स दिखादे मय्या।
सेवक दी आस पुचा दे मय्या।
जीवन की नय्या डोले मेरी,
'ज्ञान' ए पार लगादे मय्या।
प्या सेवक पुकारे, एहो अरजां गुजारे,
तेरी लग के शर्न मैं तरां। मैं रज रज....

— वे राहीया सानूं राह दस जा —

तर्ज—तेरे हत्थां नूं चड़ादू छापां छल्ले......

शेरां वाली दे द्वारे प्रेमी चले,
वे राहीया सानूं राह दस जा।
जग्ग दाती ने सुनेहे सानू घल्ले। वे....

दुर्गा शक्ति जी दे द्वारे, धर्म दा झूले झन्डा।
शीस सुनैहरी छत्र विराजे, हत्थ मय्या दे खराडा
शेर शबीला, है अनखीला, माता जी दे थल्ले। वे–

शेरां वाली माता जी दा सुन्दर भवन रंगीला
मति संग मिल प्रेमी करदे नाम दी हो रही लीला
ढोलक ते मरदंग है वजदी नाल ने वजदे छल्ले। वे–

मां जगदम्बा जी दे द्वारे लखां खड़े सवाली
दासां दीयां भरे झोलीयां शक्ति शेरां वाली
बन्न कतारां टुरीयां संगतां माता जीदे वल्ले वे–

रूप चन्डका धारके मय्या राक्षस पापी मारे
भक्तां दे मां काज सवारे डुबदे बेड़े तारे
माता जीदी शक्ति न्यारी 'ज्ञान' बल्ले बल्ले। वे–

— सुन वैष्णों दिया भक्ता —

तर्ज—कांगड़े दिया लोका पहाड़ी लोक गीत)

सुन वैष्णों दिया भक्ता, मां नूं वसा लै मन अंदर वे
विच गुफा दे माता रहिंदी, संहना सजदा मन्दिर वे
शेरां वाली माता जो दी, शेर उत्ते असवारी ए
सूहा चोला अंग बिराजे, सजदी लाल किनारी ए
सुन लाडली दिया भक्ता....

सीस मय्या दे छत्र बिराजे, रंग सुनैहरी चड़या ए
ओ प्रेमी तर गये जिन्हां ने, माता दा लड़ फड़या ए
सुन वैष्णों दिया भक्ता....

जै जै अम्बे जै जगदम्बे, सेवक जै जै बोले जी
जै जै अम्बे पापी कम्बे, भक्त कदी ना डोले जी
सुन लाडली दिया भक्ता....

मिट्ठीयां मुरादां दे के मय्या, आशा पूरीयां करदी ए
शर्धा वाले भक्तां दीयां, सदा झोलीयां भरदी ए
सुन वैष्णों दिया भक्ता—

मन मदिंर 'च 'ज्ञान' वसाके, जीवन सफल बनालै तूं
माताजी दा नाम सिमरके, मुक्ति दा फल पालै तूं –

(–) अम्बे मय्या जी दा भवन प्यारा (–)

तर्ज:—जरा होश नाल बोलीं जैलदारा (रिकार्ड)

अम्बे मय्या जी दा भवन प्यारा,
ते जित्थे सोहनी जोत जगदी।
प्रेमी बोलदे ने प्ये जै जै कारा। ते....
शेरां वाली माता जी दा भवन कमाल जी।
झुल रहे जित्थे वाह वा, झन्डे सोहने लाल जी।
सोहना मन्दिर गगन दा है तारा। ते....
धन्न है द्वारा मां दी, शक्ति है धन्न जी।
दर्शन पायां हुंदा, चित्त प्रसन्न जी।
दर्शन दा है अजब नज़ारा। ते....
सेवकां दी नय्या, मय्या कर देवे पार जी।
भक्तां दा कर देवे, जीवन सुधार जी।
शेरां वाली अम्बे मय्या दा द्वारा। ते....
अम्बे मय्या कर देवे, दूर मज़बूरीयां।
दासां दीयां 'ज्ञान' आशां कर देवे पूरीयां।
जग्ग दाती जी दा भरिया भंडारा। ते....

▯ भक्ता वे जै जै बोल ▯

तर्ज—बाबा वे कला मरोड़ पंजाबी रिकार्ड)

भक्ता वे जै जै बोल।
चल चलीये मां दे कोल।
मां दा भवन निराला।
हुन तां चालू हो गया चाला
तूं काहनूं इत्थे खड़ गया
सारा संग चड़ाई, जै जै चड़ गया वे
जै जै बोल, चल चलीये मां दे कोल-

तैनूं सुखन सुनावां साचा।
मेरा नी बटुआ किते गवाचा
सी कैश ओस विच सारा।
तूं दसदे हुन की करीये, हां हां चारा नी।
छेती बोल, किवें चलीये मां दे कोल- -

जो चीज कि किसे हत्थ आवे।
ओ दफतर जमा करावे।
अलौंस मिन्ट करवादं।
ते पूरा पता लिखादं।

हिरदे नूं साफ़ बना लै ।
चल मां तों भुल्ल बखगा लै ।

तूं काहनूं एथे खड़ गया, सारा संग चड़ाई, जै जै
चड़ गया वे, जै जै बोल, चल चलोये मां दे कोल

दफ़तर 'च भक्त है आया ।
अलौंस मिन्ट करवाया ।

हिरदे विच मां नूं ध्यांदे ।
इक दूजे तांई सुनांदे ।

असीं बटुवे तों हत्थ धोके ।
बह गये निरासे होके ।

सी कैश ओस विच सारा, तूं दस दे हुन की करीये, हां हां
चारा नी, छेती बोल । किवें चलीये मां दे कोल... ... ...

सी बटुआ जिदे हत्थ आया ।
उस दफ़तर जमा कराया ।

ए मां दा सच्चा द्वारा ।
मिल गया कैश है सारा ।

दफ़तर विच भक्त बुलाया ।
गिन सारा कैश फड़ाया ।

तूं काहनूं एथे खड़ गया, सारा संग चड़ाई, जै, जै
चड़ गया वे जै ज बोल, चल चलीये मां दे कोल... ... —

मय्या बड़ी मेहर बान है

तर्ज—हो आज मोसम बड़ा बेईमान है (लोफर)

हो मेरी मय्या, बड़ी मेहरबान है
बड़ी. मेहरबान है । मेरी मय्या- -
शेरां वाली, देती वरदान है
देती वरदान है । मेरी मय्या- -

आशा पूर्ण मय्या कर रही है।
दासों की झोलीयें भर रही है।
जो भी शर्न मय्या जी की आए,
उनके मय्या कष्ट को हर रही है।
महिमा मय्या की सुनी मैं महान है। मेरी ..

हो मेरी मां है शेरां वाली।
जिसकी जग रही जोत निराली
अम्बे मय्या मुरादें है देती,
जिस का सारा जगत है सवाली।
देती भक्तों को मय्या 'ज्ञान' है। मेरी..

- दुर्गा आरती -

ओम, जय दुर्गे मईया, ओम जय दुर्गे मईया।
हिंद धर्म की शक्ति, पार करो नय्या।
जोत जगावां तिलक लगावां, पुष्पन को लयावां।
दर्शन आप दिखाओ, फल मुक्ति पावां। ओम०
हिरदा शुद्ध बना कर, बिरती की बाती।
पांच तत का तेल, जला दो दिन राती। ओम०
सात सुपारी भेंट तुम्हारी, भक्त खड़े दर पे।
मन वांछत फल देवो, बेनती यह करते। ओम०
मनो कामना पूर्ण करती, तुम सब की मईया।
भारत की अब शक्ति, पार करो नय्या। ओम०
तुमरे दर जो आवे, तुम से फल पावे।
दूत पूत धन देवें, शरणी जो आवे। ओम०
तीन लोक की दाती, दुर्गे महा माया।
नाम सिमर भक्तों ने, तुम से फल पाया। ओम०
शेर सवारी अधिक प्यारी, दहने हाथ खराडा।
भवन सुनैहरी सोहे, झूल रहा झराडा। ओम०
दरबारा सिंह मईया, कहे मोन धारी।
तेरा अन्त नहीं पाया, महिमा है न्यारी। ओ...

भवन तेरा

तर्ज़—इन्हीं लोगों ने ले लीना (पाकीज़ा)

अम्बे मय्या जी, अम्बे मय्या जी,
अम्बे मय्या जी, है रंगीला भवन तेरा....
ा जी होभवन तेरा, हां जी हां भवन तेरा।अम्बे०

जैसे गगन में, तारा है चमके-३
ऐसे है खूब चमकीला, भवन तेरा।
ा जी हो भवन तेरा, हांजी हां भवन तेरा, अंबे०

कन्या भवन में, गाती हैं भेटें-३
गूंज रहा है सुरीला भवन तेरा।
ा जी हो भवन तेरा, हां जी हां भवन तेरा, अंबे०

युद्ध में शक्ति मां, देती तू शक्ति-३
शक्ति वाला है, अणखीला भवन तेरा।
ा जी हो भवन तेरा, हां जी हां भवन तेरा। अंबे०

द्वारे लगाई है भगतों ने लीला-३
'ज्ञान' है छैल छबीला भवन तेरा।
ा जी हो भवन तेरा, हां जी हां भवन तेरा। अंबे०

मय्या का नाम सुबह शाम तुम जपो

तर्जः—देखो ओ दीवानो (हरे कृष्ण हरे राम)

सुनो प्रेमीयो जी निष्काम तुम जपो।
मय्या का नाम, सुबह शाम तुम जपो २।
प्रेम से बोलो जय जय माता।
जय जय माता, जय जग दाता।
वो माता तुम, बालक बीबा।
मूँह नहीं थकता, घसती न जीभा २।
बोलो मय्या जीका नाम२ लगे कुछ न मोल बिना दाम तुम०
प्रेम से बोलो जय जय शक्ति।
जय जय शक्ति करूं तेरी भक्ति।
जय जय भक्तों की मां रखवाली।
जय जय काली, खप्पर वाली २।
बोलो मय्या जीका नाम२, सबको यही है पैगाम तुम जपो०
प्रेम से बोलो जय जय अम्बे।
जय जय अम्बे जय जगदम्बे।
जय जय वैष्णों ज्वाला माई।
भीड़ समय मां होती महाई २।
बोलो मय्या जीका नाम२ 'ज्ञान' मांके जापको जी तमाम०

तर्ज़–यूंही कोई मिल गया था (पाकीज़ा)

चलते चलते, चलते चलते।
र्गा की जै जै बोलो, जैकार चलते चलते २
हरदे को साफ बनाना, दरबार चलते चलते
मय्या की जै जै....
ल गंगा चर्ण चिन्ह, और आद कुमारी का २
न रासते में पा लो, दीदार चलते चलते २।
मय्या की जै जै बोलो, दुर्गा की जै जै–
रास्ते से भूले, उसे तुम राह बताना है २।
रास्ते में करना, उपकार चलते चलते २।
मय्या की जै जै बोलो, दुर्गा की जै जै–
विछड़े साथी हों,उन्हें तुम साथमिलाना है२।
को हा मां का समझो, प्रवार चलते चलते २
मय्या की जै जै बोलो, दुर्गा की जै जै–
लिखता है दास महिमा, मय्या जो लिखाती है२
करता है 'ज्ञान' मां का, प्रचार चलते चलते २
मय्या की जै जै बोलो, दुर्गा की जै जै–

जै बोलो अस्थान की (100)

तर्ज—जै बोलो बेईमान की (बेईमान)

मां की लीला न्यारी, जा महिमा अजब महान की
जय बोलो २ अस्थान की जय बोलो....
चिन्तपुरनी माता जी का जलवा देखा आला
वैष्णों मा का देखा मैंने, सुन्दर भवन निराला
नगर कोट जो धाम बना है, करता खूब उजाला
कहीं पे नैना देवी मय्या, कहीं पे मात ज्वाला
जग मग जोतें जग रहीं, जी लीला देखो शान की। जै...
दुर्गा शक्ति जी का अकबर, अंत लैन जब आया
लोहे के तवे जड़ा कर, पानी जोतों पर डलवाया
तवे फाड़ कर लाटें निकली, मय्या तेज दिखाया
ध्यानू का फिर घोड़ा काटा, अम्बे आन जिवाया
टूट गई है गुड्डी, जी अकबर के अभिमान की
जो भी शर्धा भक्ति लेकर द्वार मय्या के आए
दुर्गा जी के द्वारे से वो मूँह मांगे फल पाए
मन मन्दिरमें 'ज्ञान' बसा के, नाम कीजोत जगाए
माता आशा पूर्ण करती, जीवन सफल बनाए
सारे जग में धूम पड़ी हैं, मय्या के वरदान की। जै...

ये मां का द्वारा है ऐसा

तर्ज़–ये राखी बन्धन है ऐसा (बेईमान)

ये मां का द्वारा है ऐसा, ये मां का द्वारा है ऐसा
यहां सुन्दर कुंड हवन का,
क्या कहना है भवन का।
चमके ज्यों तारा गगन का। ये....
शक्ति मां शक्ति देती है, इस देशकी रक्षा इसमें है
है मां का सच्चा ये द्वारा कि जोत निराली जिसमें है
अब समां है जोत जगन का
क्या कहना है भवन का। चमके०
धर्म कर्म का यह तो केन्द्र साची राह बता दे।
दूध पूत धन विद्या देकर मय्या भाग जगा दे।
यह सागर है पवन का,
क्या कहना है भवन का। चमके०
मन मंदिर में मय्या के जो, नाम की जोत जगाए
अम्बा जी के द्वारे से वो, मूंह मांगे फल पाए।
'गुलशन' खिल जाए चमन का
क्या कहना है भवन का। चमके०

आया द्वारे तेरे

तर्ज—तुम मिले प्यार से (अपराध)

आया द्वारे तेरा ले सहारा मय्या
खड़ा दर पे ये सेवक तुम्हारा मय्या

बिरती है जोड़ दी, ले के मां आशा तुम्हीं से
कैसे जाऊं मय्या, अब निराशा तुम्हीं से
भवन प्यारा, गगन का तारा, गगन का तारा
भवन प्यारा, प्यारा द्वारा ये तेरा। आया-

तेरी निराली है महिमा, मंदिर में जोती जगे मां
तेरी प्यारी गुफा मां, चरणों में गंगा वगे मां
चले फुहारा, गंगा की धारा, गंगा की धारा
चले फुहारा, प्यारा द्वारा ये तेरा। आया-

तेरे सेवक हैं हम, हर हाल में, पूजा करेंगे
ले सहारा तेरा, मां 'ज्ञान' से, हम तो तरंगे
ये संग सारा, बोले जै कारा, बोले जै कारा
ये संग सारा, प्यारा द्वारा ये तेरा। आया-

आया तेरे दरबार

तर्ज–नफरत की दुनियां को छोड़के (हाथी मेरे साथी)

मय्या के बन्धन को तोड़ के, बीच पहाड़ों के
आया तेरे दरबार।
आया सारा जग छोड़के, तेरा ए बचड़ा मां
शर्ण लगा लो एक बार....

मां दूर से आए, यह दास हैं दवारे
गाते हैं मां तेरी, महिमा को ये सारे
जब तू वरदाती हैं, मय्या फिर क्यों न ये तेरी,
पूजा करे संसार। आया....

तेरी जुदाई मां, अब सह नहीं सकता
बेटा विछड़ कर मां, से रह नहीं सकता
मैं दास तुम्हारा हूं मुझे अंबे अपना कर जी,
दे दो मुझे मां प्यार। आया....

मरी यही चाहना, अब दर्स दिखादो मां
जी 'ज्ञान' मुझे देकर, जीवन बनादो मां
लादो मां किनारे पे तूहीं नय्या मेरे जीवन की
कब से पड़ी मंझधार। आया....

आद भवानी है

तरज—आने से उसके आए बहार (जीने की राह)

मां के दर्श की आई बहार,
द्वारे पे हो रही जै जैकार।
आदि भवानी है, मेरी अम्बे मय्या
कि जोत नूरानी है, मेरी अम्बे मय्या
तीन लोक की दाती, श्रीदुर्गे मय्या मेरी अम्बा
दासों के कष्ट मिटाने, हुई प्रगट मय्या जगदम्बा
भक्तों ने दुर्गा जी, शक्ति मानी है।
मेरी अम्बे मय्या। मां के दर्श की आई बहार–
भक्त दर्श को आए, आए असू का जवर महीना
गर्धां वाले दासों का, अम्बे मय्या ने कार्ज है कीना
मेहरां मां करती है, बड़ी दयावानी है
मेरी अम्बे मय्या। मां के दर्श की आई बहार–
शक्ति मय्या के द्वारे, मन 'ज्ञान' बसाके जो आए
दुर्गा भवानी मां से, मन मांगे मनोर्थ वो पाए
पूर्ण मां आस करे, दाती वर दानी है
मेरी अम्बे मय्या। मां के दर्श की आई बहार–

मेरी मां भी तू है

तरज–मेरा प्यार भी तूं हैं (साथी)

मेरो मां भी तू हैं, जग की मां भी तू हैं
तू ही हर मन की जाने है मइया, तू जरे जरे में 2

बृहमा विष्णू शंकर ध्याए,
ध्यानू तेरी जोत जगाए ।
पांडों भी हैं दास तुम्हारे,
सब जग तेरी महिमा गाए
चरणों में सर को झुकाए। मेरो

सारे जग में छाया अम्बे,
जगदम्बे अकार है तेरा ।
ऊंचे ऊंचे प्रर्वत में मां,
सोहना सोहना दरबार है तेरा
सुन्दर है दीदार तेरा। मेरी०

दास तेरा मां दर पे आया,
मेरो मइया जी आस पुचाना ।
'ज्ञान' दर्स की चाहना मन में,
जोत शमां का हूं प्रवाना,
नईया पार लगाना, मेरी०

प्रीत तेरी साची

तरज—काची रे काची (हरे रामा हरे कृष्णा)

साची माँ, साची प्रीत तेरी साची
माया में बन्दे को छोड़के ...

तेरे हाथों में मेरी है डोरी मइया।
मैंने लेली शर्न है तोरी मइया।
बेटा को भाया, द्वारे पै आया,
माया के बन्धन को तोड़के। साची ..

तेरा है साचा द्वारा मइया।
दासों को तेरा सहारा मइया।
वापस न जाऊंगा, फल तुम से पाऊंगा।
बिनती मेरी हाथ जोड़ के। साची ..

नाम तेरे में मन रंग लीया।
मुक्ति का दान मैंने मंग लीया।
'ज्ञान' सिखादो, जीवन बनादो,
खाली न टोरो मुझे मोड़के। साची ..

दरबार देखो

तर्ज—दिल्ली का कुतबमीनार देखो (फिलम—दुश्मन)

देखो देखो देखो, प्रेमी जरा देखो

दुर्गा की महिमा अपार देखो, भवनपे खिली गुलबार देखो
दर्श की अजबकीबहार देखो, मइया का सोनादरबार देखो
जै जै बोलो, नजारा देखो...

मइया शेरा वाली, दासों की रखवाली
करे मां आशा पुरी, आते जो सवाली
शेर पे मईया सवार देखो, अम्बा का खूब दीदार देखो
चर्णों में गंगाकी धार देखो, मइया का सोना दरबार देखो
जै जै बोलो, नजारा देखो...

अम्बा के द्वारे, आए प्रेमी प्यारे
मिल के सारे बोलो मईया के जैकारे
भक्तों की शर्णांके द्वार देखो, मईया का भक्तों से प्यार देखो
अम्बा को पूजे संसार देखो, मईया का सोहना दरबार देखो
जै जै बोलो, नजारा देखो ..

दुर्गा के द्वारे, जो सर्धा से आए
निसचे वाला प्रेमी, मां से फल पाए
अंबाका सोहना उपकार देखो, मईया काभरा भंडार देखो
करकें 'ज्ञान' विचार देखो, मईया का सोहना दरबार देखो
जै जै बोलो, नजारा देखो ..

एक मन्दिर

तर्ज–मैंने देखा तूने देखा [दुश्मन]

मैंने देखा, तूने देखा, इसने देखा, उसने देखा।
सब ने देखा, क्या देखा, क्या देखा।
एक मन्दिर जो मन्दिरों से प्यारा है।
मैंने देखा, तूने देखा, इसने देखा, ऊसने देखा .
दुर्गा शक्ति मइया का द्वारा है।
मन्दिर, मन्दिर जो मन्दिरों से प्यारा है ..

बीच पहाड़ों के मइया का, सुन्दर मन्दिर प्यारा
ऐसे मन्दिर चमक रहा है, जैसे गगन का तारा
सुन्दर गुफा सुहानी है, मां मेरी वरदानी है
जिसकी जोत नुरानी है, नुरानी है। मैंने देखा...
मां के दर्शन का अजब नजारा है। मन्दिर..

मां का प्यारा मन्दिर है, मन्दिर प्यारा ये लागे
जिस प्रेमी पे मेहर करे मां, उसकी किस्मत जागे
भक्तों को रखवाली मां, दासों की प्रितपाली मां।
मइया शेरां वाली मां, वाली मां। मैंने देखा ..
'ज्ञान' भक्ति का ये भंडारा है। मंदिर...

संग ऐसी अदा से

तरज—हाय कुछ ऐसी अदा से वो मेरा (यार मेरा)

जो सग ऐसी अदा से है दरबार चला
हर तरफ गूंज हुई कहता जै कार चला
' वो चला, वो चला, जो वो चला। जो संग ...

लेके ढोलक चिमटा जी मइया के गुण गाता है
छैनियों की धुन से जी हर इक मन को लुभाता है
प्रेम से झंडा सजाके, हो के त्यार चला
हर तरफ गूंज हुई, कहिता जैकार चला—

खूब प्रेम से है चला जी, मंडली को सजा के
अम्बे शकित जी की जोती को मन में बसा के
दुर्गे मां दर्स दिखादे, ले के परवार चला
हर तरफ गूंज हूई, कहिता जै कार चला—

जो भी शर्धा को लीये, मइया के दर जाता है
निसचे वाला प्रेमी है जो, मां से फल पाता है
'ज्ञान' मइया जी का ये करता प्रचार चला
हर तरफ गूंज हुई, कहिता जैकार चला-

रंग बरसे

तरज-तेरा चिकना रूप है ऐसा (गवार)

रंग बरसे दवार पे ऐसा, दवार पे ऐसा
हो रही है नाम की लीला।
करूं दर्श कहे मन मेरा, कहे मन मेरा
भवन तेरा चमकीला ॥
हर मन भाए, खूब सुहाए सुन्दर गुफा प्यारी
तेरी मां शेर सवारी, दर्श कब होगा
तू हरएक की मां जाने, हम जोती के प्रवाने तू०
चल आये हैं प्रेम पुजारी,जी मात हमारी,कि शर्न तुम्हारी
तेरे भक्तों को मईया जी, तेरा सिरफ सहारा
पूज रहा जग सारा, कि मैं भी जाप करूं
तू दाता है लालों की, सारे इन बालों की, तू०
जीवन मां सफल बनाना,मुझे अपनाना, कि शरन लगाना -
तू हीं वैष्णों, तू हीं ज्वाला तू हीं है मां मंगला
भवन तेरा रंगला कि बैठी राज करें
रखवाली तू दासों की, प्रतिपाली तू दासों की। रख
मां ज्ञान' दास है तेरा,पढ़ा है अन्धेरा,करो जी सवेरा रंग...

जगदम्बा आरती

ओम जय अम्बे मईया, ओम जय अम्बे मईया
भक्तों की रक्षा पालक, जगदम्बे मईया।
रक्त बीज महिषासुर, चन्ड मुन्ड मारा।
मान तोड़ अकबर का, ध्यानू भक्त तारा। ओ०

जोत नूरानी आदि भवानी, तुमसा नहीं दूजा।
बृह्मा विष्णू ध्यावे, शिवजी करे पूजा। ओम—
सीस छत्र हत्थ खड़ा, शेर पे असवारी
तीनलोकी यश गावे, सिमरे नर नारी। ओम—

तू हिंगलाज भवानी, मां कांगड़े वाली।
तू हीं मां नैना देवी, तू हीं महाकाली ओम
तू ही वैष्णों दाती भवन तेरा आला।
तू ही चितपुरनी है तू हीं मां ज्वाला। ओम—

नाम अनेक एक हैं जोती, जलवा प्रेम भरा।
भक्तों के दुख हरने, पल पल रूप धरा। ओम...
मां 'जगदम्बा जी की आरती जो गावे।
मन में 'ज्ञान' बसाकर, फल मुक्तों पावे। ओम—

Shri Gurbakhsh Singh Gayan s/o Sant Darbara Singh R/o Sangat Pura Ludhlana met me at Shri Naina Devi Ji Singing self prepared Bhajans of Durga Mata in the last Sawan Ashtami fairs and to day he met me at Talai Dewot Sidh mandir Singing attraction songs of Baba Balak Nath ji with certain self edited of Baba ji and shri Durga Mata ji. I found him very good singer of religiaus songs connecting Hindu Sikh. He Works for the Unity of Hindu Sikh which. is very Good for work. I wish him all success,

(Budh Ram Thakar)
Magistrate Ist class S. D. M. Ghumarvi
(Bilaspur Distt. H.P.)
Camp Talai 16—4—1972:

Magistrate Ist class
Distt Bilaspur (H:P)

□ तेरी मेहर की मां नजर चाहीये □

तरज—दीवाने हैं दीवानों को न घर चाहीये जन्जीर

दास हैं मां दासों के, न जर चाहीये २
तेरी मेहर की मां, नजर चाहीये २
तुम्हारे मां द्वारे से जाएं हम कहां मेरी अम्बे मां
भक्तों को तेरा, मां दर चाहीये २। दास....
तुम्हारा द्वारा खुल्ला मेरी मां २
दासों के लीये तो, येही आशियां २
हम आप से मांगते कुच्छ नहीं २
यहां तेरा दर है खुशी है वहीं
येही खयाल मन मैं हमारे मय्या, तुम्हारे मय्या
झुका रहे मां चरणों में सर चाहीये२। दास....
तेरी मेहर के मां, इशारे हुये २
सेवक मां हम तो, तुम्हारे हुये २
हम आ गये मां तेरे द्वार में २
लगा 'ज्ञान' तेरे मां प्रचार में
कुच्छ और चाहीये न दरबार से, तेरे द्वार से
दीदार तेरा, मगर चाहीये २। दास

- बिगड़ा ए नसीबा -

तरज—बनाके क्यों बिगाड़ा रे (जन्जीर)

बनादो मेरा बिगड़ा ए, बिगड़ा ए नसीबा
शेरां वाली, मेहरां वाली। बना दो मेरा ...

मेरे जीवन की नय्या मां, बीच पड़ी मझधार के
बिगड़े काज सवारदीये मां, तूं सारे संसार के
भाग जगादो पार लगादो, बिगड़ा ए नसीबा
शेरां वाली, मेहरां वाली, बनादो मेरा...

दास तेरा ये दर पे आया अपनी शर्न लगालो मां
और मेरा ना कोई सहारा, सेवक को अपनालो मां
दर्स दिखादो आप पुचादो। बिगड़ा ए नसीबा
शेरां वाली, मेहरां वाली। बनादो मेरा....

हम सबी हैं बालक तेरे, तूं जग जननी माता है
तेरे दर के हम हैं भिखारी, तूं मय्या जग दाता है
'ज्ञान' सिखादो, जीवन बनादो, बिगड़ा ए नसीबा
शेरां वाली, मेहरां वाली। बनादो मेरा

[] जागे मय्या तेरी जोती []

तर्ज—ओ ओ. नींद चुराए चैन चुराए (अनुराग)

जै हो, दर्श दिखाए, आस पुचाए,
जागे मय्या, तेरी जोती, दीवाली जैसे
दीवाली जैसे करे उजाला खूब जग मगाए —
सीस मय्या तेरे छत्र है साजे,
भवन सुनैहरी चमके मां।
सूहा जी चोला तेरे अंग विराजे,
जोत निराली दमके मां।
तेरी जोती जले, खूब गंगा चले, हर मन को भाए। जागे...
ब्रह्मा विष्णू शंकर मय्या तेरी,
महिमा को गाया करते हैं।
इन्द्र यानूं पांडो अम्बा तेरी,
जोत जगाया करते हैं।
खूब जोती सुहाए, महिमा कही नहीं जाए। जागे...
एक बार मेरी मय्या जी जो,
द्वारे तेरे पे आता है।
जग जननी जगदम्बे मय्या तेरा,
वो सेवक बन जाता है।
'ज्ञान' मन में बसाए, जीवन को बनाए। जागे.

— इक मन्दिर है —

तर्ज—ओ ओ तेरे नैनों के में दीप जलाऊंगा अनूराग)

वै हो तेरे मन का प्यास मैं मिटाऊंगा
तुझको मय्या जी का दर्स कराऊंगा

अच्छा, वो क्या है, इक पर्वत है।
उस पर्वत में. इक जोती है।
वो जोती कैसी जोती है, वहां मां की पूजा होती है...

मैं क्या जानूं जगदम्बे का रूप हैं क्या
अम्बे शक्ति मय्या का सरूप है क्या

वो क्या है इक मन्दिर है।
उस मन्दिर में, इक मूरत है।
वो मूरत कैसी प्यारी है, येही तो मात हमारी है..

आया मौसम है अब दर्शन पाने का
जगदम्बे मय्या जी के दर जाने का

वो क्या है, इक द्वारा है।
उस द्वारे पे, कई झन्डे हैं।
वो झन्डे कैसे लसानी हैं, मां के दर की ये निशानी है—

'ज्ञान' हिरदे में होता है जब भक्ता
होते पूर्ण सबी मनोर्थ तब भक्ता

अच्छा, वो क्या है, इक शेर है।
उस शेर पे, इक कन्या है।
वो कन्या कैसी निराली है, येही मां तारन वाली है
वो क्या है, इक शेर है। ज जै जै, जै जै जै—

भक्तों को मय्या शर्न ला लो

तर्ज—धीरे धीरे बोल कोई सुन न ले (गोरा और काला)

क्तों को मय्या शर्न ला लो,
पनालो मां अपनालो।
मान हमें तुम पर नहीं,
छोड़ेंगे तुम्हारा दर नहीं। भक्तों
ास तुम्हारे आए हैं दरबार।
ेट हमारी करलो मां स्वीकार।
हैं बाल हम, मां लाल हम, मां दास हमें तुम जान ले
चरणों में हमारा सर नहीं। छोड़ें
सेवक सिमरे मय्या तेरा नाम।
पूर्ण करदो दासों के तुम काम।
नादान हम, अजान हम, हैरान हम, परेशान हम
मां चैन हमें पल भर नहीं। छोड़ें...
दर्शन पाने आए मां तेरे लाल।
दासों को तुम करदो मां खुशहाल
दो ज्ञान मां, वरदान मां, झूठा जहां, जाए कहां
मां दास निरासे कर नहीं। छोड़ें—

— मैंने मय्या के द्वार जाना है —

तर्ज—आंखों आंखों में बात होने दो आंखों आंखों में)

मैंने मय्या के द्वार जाना है।
दुर्गा जी का दर्शन पाना है।
जै जै बोलो जी।
जै जै बोल के, जीवन को में सफल बनाना है। मैंने...

मां का भक्त न डोले, जै हो, जै जै मुख से बोले
मां की शर्ण जो लागे, मुक्ति का वर टोले
दुर्गा मात हमारी, जिस ने सृष्टि तारी
चर्णों में सर को झुकाना है।
मैंने मय्या के द्वारे जाना है

मां की शेर सवारी, जै हो, लगती खूब प्यारी
महिमा कही न जाती, लीला अजब न्यारी
'ज्ञान' ए जोत जगी है।
प्यारी हमें लगी है।
जोती को जी मन में बसाना है।
मैंने मय्या के द्वारे जाना है

— मय्या का अशियाना —

तरज मौसम है आशिकाना... (पाकीजा)

मय्या का अशियाना

न ऊंचे पर्वतों में, सुन्दर भवन सुहाना २ . . .
ौतक मय्या जी अपने, भक्तों को दस रहे हैं
म्बा जी सेवकों के हिरधे में बस रहे हैं
र्गा की मूरती को, मन में है तूं बसाना २
मय्या का अशियान—

र्धा से जो भी जाऐ, मय्या फल वो पाऐ,
क्ति मां सेवकों को. आशा सबी पुजाऐ।
र्गा की जोत को है, हिरदे में तूं जगाना २
मय्या का अशियाना....

यों कष्ट तूने झेले, मय्या की शर्न ले ले
ल प्रेम से मय्या की, जै जै को तू बुलाना २
हे गूंज हैं जैकारे. दर्शन के हैं नजारे,
अम्बे भवानी मां ने, लाखों ही दास तारे
रके 'ज्ञान' प्रेमी, जीवन को तू बनाना २....

मन्दिर मशहूर है

तरज—अपनी 2 बीवी पे सब को गरुर है (दो रासते)

प्यारा प्यारा मय्या का मन्दिर मशहूर है
जाना मैं जरूर चाहे कितनी भी दूर है

अम्बे मय्या जी का, मैं दर्शन पाना
मय्या जी की जोती, का मैं हूं प्रवाना
जोती है निराली, कि निराला जिसमें नूर
प्यारा प्यारा मय्या का, मन्दिर मशहूर

अम्बे मय्या जी का, है जगत सवाली
सेवकों के माथे पे, नाम की है लाली
नाम वाला भक्तों को, चढ़या सरूर
प्यारा प्यारा मय्या का, मन्दिर महूर

भूल रहे झगडे, ऊंची धुजा की उड़ान है
भक्तों को अम्बे मय्या, देती वरदान है
प्रेमीयों की गोद मय्या, करती भरपूर है
प्यारा प्यारा मय्या का, मन्दिर मशहूर है

— चर्णों में सर झुकादूं —

तर्ज–मेरे दिल मैं आज क्या है तू कहे तो मैं बता दूं (दाग)

मेरे दिल में यह है चाहना,
चर्णों में सर झुकादूं।
तेरी आरती मैं गाऊं,
तेरी जोत मैं जगादूं। मेरे....
मन में तुझे बसा कर, तेरी करूं मैं पूजा
शर्द्धा के हार मय्या, तेरे गले पहिनादूं
तेरी आरती मैं गाऊं..
मेरी प्यास को मिटादो, मेरी आस को पुजादो
बेटा अगर तू बखशे, तुझको छत्र झुलादूं
तेरी आरती मैं गाऊं
सनमुख अगर तू मय्या, दर्शन मुझे दिखाएं
नरयल के बदले भेटा, मैं सीस को चड़ादूं
तेरी आरती मैं गाऊं....
है 'ज्ञान' दास तेरा, कर मेहर की नजर मां
धन मां अगर तूं बखशें, शुभ काम में लगादूं
तेरी आरती मैं गाऊं...

() सुन सेवका ()

तर्ज–सुर री पवन २ पवन पुरवया (अनूराग)

सुन सेवका, सुन प्रेमीया, मां है खवया
मां का दुलारा, प्यारा, आंखों का तारा
ओ तूं बन जा सेवका-

रख तू प्रेमी मन थाम के।
बिखड़े हैं रस्ते मां के गाम के।
बोल तूं जैकारे मां के नाम के।
अजब नज़ारे इस धाम के।
आशा जो तुम्हारा पुचाए गा मय्या।
मां का दुलारा प्यारा, आंखों का तारा—

जग रही जोत दिन रात जो।
'ज्ञान' का उजाला करे मात वो।
मां है सदा संग तेरे साथ जो।
सुन लेगी तेरी हर बात वो।
अम्बे मां तुम्हारा करेगी पार नय्या।
मां का दुलारा, प्यारा, आंखों का तारा-

० माँ को याद कीया जाए ०

तर्ज—कच्चें धागे के साथ जिसे बांध दीया जाए(कच्चे धागे)

सच्चे हिरधे से जे माँ को, याद कीया जाए
फिर माँ सेवक अपने को क्यों न दर्स दिखाए
माँ मरी है प्रेम की भूखी, चले न जोग जोरी
वो प्रेमी तर गए जिन्हों ने पकड़ी नाम की डोरी
किसी ने सच्च ही कहा है कि-
सच्चे हिरधे से जो जै जै कार बुलाए
फिर मां से वो कैसे न मन मांगे फल पाए। सच्चे...

सातों भैणें मिल कर मय्या, झूल रही हैं झूला
जिसने हीरा जन्म गवाया, वो तो जानो भूला
किसी ने सच्च ही कहा है कि
सच्चे हिरधे से मय्या के जो गुण गाए
फिर मां सेवक अपने की क्यों न आस पुचाए। सच्चे...

मन मन्दिर में 'ज्ञान' बसाकर, जो भी करते पूजा
वो तो कहिते माँ के जैसा सानी और न दूजा
किसी ने सच्च ही कहा है कि
सच्चे हिरधे से जो मांकी जोत को जगाए
फिर मां कैसे उसका न जीवन सफल बनाए। सच्चे...

— सेवक सारे —

तर्ज– दो बिचारे, बिना सहारे (विक्टोरिया नं० 203)

सेवक सारे, तेरे सहारे, आए हैं तेरे द्वारे
नय्या मय्या लाओ किनारें, बोलें जै जै कारे...

दासों की मां ये है चाहना, अम्बे मय्या आस पुचाना
तेरी महिमा को है गाना, जी मय्या जीवन बनाना
अम्बे मय्या, मैंने तेरा सहारा लीया है।
मां अपनालो, येही सेवक ने निसचा कीया है।

भक्तों ने शक्ति मानी, झण्डे झूलें भवन पे लसानी
गुफा सुहानी, निर्मल पानी, जोत नुरानी आदि भवानी
महारानी जगदम्बे, तेरी जै हो मां, हमें मां शर्न ला
मां आजा, दर्स तो दिखाजा। सेवक...

जी मय्या, हम खा रहे हैं दर दर पे ठोकर।
दर आए, तेरे दर के भिखारी मां हो कर।
बड़ी दूर से मां हम आए।
शर्द्धा के हार लयाए। पहिनाए

आके तेरी भेट चड़ाए, जोत जगाए, सीस झुकाए
हो जी अम्बे, ठुकराओ न, हमें मां शर्न ला
मां आजा, 'ज्ञान' सिखाजा। सेवक...

— प्रेम की मंजल —

र्ज—ये माना मेरीजां मुहबत सजाहै (कवाली हसते जख्म)

रा है यह द्वारा चाहे कितनी भी दूर
मेरी मां हमको कदम फिर भी उठाना ही पड़ा
मां के दर पे हम जाएंगे हम जाएंगे जरूर
दिल ने इस तरहें पुकारा हमें आना ही पड़ा

है कठन मेरी मां, प्रेम की मंजल
इत्ना नज़ारा इस में मगर किस लीरं है

दासों पे जे तू मां मेहर करें न
तो फिर मेहर की मां नज़र किस लीये है

है कठन मेरी मां प्रेम की मंजल...

दास औखी घाटीयों पे चलना न जाने
चलना न जाने, सम्भलना न जाने

मुझे अपनालो, शर्न मां लगालो
झुका दूंगा सर मां ये सर किस लीये है

दास औखी घाटीयों पे

सहारे भी देखे, नज़ारे भी देखे।
जीवन नय्या के किनारे भी देखे।

लाखों ही देखे मां मैंने द्वारे।
तुमसा मिला न द्वारा कहीं।

भटकता रहा हूं माया में मैं,
मुझे मां मिला न सहारा कहीं।

दासों को दर का जे मिले न सहारा,
मां फिर तम्हारा दर ये किस लीये है।
सहारे भी देखे, नजारे भी देखे –

तूहीं याद कीया, तुम्हीं ने बुलाया।
दास यह तुम्हारा मां दर तेरे आया।

जो भी तुम्हारी मां शर्न आ जाए।
मांगे फल तुम्हीं से वो पा जाए।

कर 'ज्ञान' तेरे मां दर पे सदा,
मन मन्दिर में तेरी जोती जगाए।

तेरी जोत करे हर घर में उजाला,
यहां जगे जोत न वह घर किस लिए है। है –

० गीत तेरे गाए ०

तर्ज—मेरी पायलिया गीत तेरे गाए (जुगनू)

तेरा सति संग कीया, चोला गूड़ा रंग लीया
डोरी तेरें नाम की, है फड़ी तेरे दास मां
तेरी तस्वीर २ मन में बसालूं रहूं पास मां

तेरा सेवक मां गीत तेरे गाए।
चले धीरे धीरे तेरी शर्न आए। तेरा - -
तन बोलेजी जै जै अम्बे, मन बोले जी जै जै अम्बे
सारा संग तेरा तेरी जै जै मां बोले।
पापी मन कम्बे, मां सेवक न डोले।
ब्रह्मा जी ध्याए, विष्णु मनाए।
शिव गुण गाए, पूजा करन आए। तेरा -
दर तेरे आऊं, दर्शन मैं पाऊं।
श्रद्धा की मय्या जी भेट चड़ाऊं।
जोती को जगाए, मन में बसाए
जीवन बनाए, सागर तरन आए। तेरा-
बिनती 'ज्ञान' करे तेरे आगे।
भक्तों की अम्बा जी तकदीर जागे।
चाहना है मन में, तेरे भवन में
तेरे चरनन में, सीस धरन आए। तेरा.

मुरादें मां से तुम पालो

तर्ज–समझौता गमों से करलो (समझोंता)

मुरादें मां से तुम पालो २
मय्या से फल भी मिलते हैं। हो....
मुक्दर सोए क्यों न हो,
कि गुलशन फिर भी खिलते हैं....
चले गुफा में जल की धारा।
हर प्रेमी को मिले किनारा।
ऊंचे है पर्वत में मां का भवन प्यारा। हो
मय्या जी की शेर सवारी।
भक्तों को है लगे प्यारी।
मां जगदम्बा जी ने, तारी सृष्टी सारी। हो ...
मां के कौतक अजब निराले।
सेवक मां के शर्द्धा वाले।
हर घरोंमें कर देती है, मेरी मात उजाले।हो....
'ज्ञान' मय्या की जोत जगाई।
मां ने उस की आस पुचाई।
जाप करे जो मय्या जी का, मुक्ति उसने पाई। हो–

जै जै बोले सेवक तेरा

तर्ज-झूठ बोले कऊआ काटे (बोबी)

जै जै बोले सेवक तेरा, दर्शन मां दईयो
मैं दास तेरा बन जाऊंगा, तुम शर्न लगा लईयो २

तू मेरे दर पे आएगा, मैं तुझको दर्स दिखाऊंगी २
मां मुझको दर्स दिखाएंगी, मैं भेटा लेके आऊंगा २

मैं तेरी प्यास मिटाऊंगी ।
मैं तेरी जोत जगाऊंगा ।
मैं तेरी आस पुचाऊंगी ।

वचन करे २ सेवक दर आए, तुम भूल न जईयो ।
मैं दास तेरा बन जाऊंगा, तुम शर्न लगा लईयो २ जै...

जे सेवक तू बन जाएगा, मैं तुझको शर्न लगाऊंगी २
मां मुझको शर्न लगाएंगी, कि मेरी आस पुचाएंगी ।
मैं तेरे हीं गुण गाऊंगा, मैं तेरे ही गुण गाऊंगा ।
हिरधे में 'ज्ञान' बसाऊंगा, मैं जीवन सफल बनाऊंगा ।
हर साल द्वारे आऊंगा, मैं सातो वचन निभाऊंगा ।
मैं तेरे ही गुंण गाऊंगा, मैं तेरें ही गुण गाऊंगा ।

जै जै बोले सेवक तेरा--

हरदम दर पे अन्नद है

तर्ज- बाहर से कोई अंदर न जा सके (बोबी)

प्रेमी द्वारे मय्या के जा रहे।
अम्बा जी के दर्शन को पा रहे।
भक्तों ने सिमरन कीया है २
हरदम, दर पे अन्दर है, दर्शन हो जाए।
जो भी विसचे से दर बाए मां के, वो तो फल पाए। हरदम
मय्या का मन्दिर प्यारा।
जैसे है गगन का तारा २
मय्या की हो रही हैं भक्ति।
शक्ति की भक्ति व शक्ति।
भक्तों ने सिमरन कीया है २
हरदम, वहां जग रही है जोती, प्रेमी भेटा को लाए-
जो भी मां का दर्श पाए वह तो, दास बन जाए। हरदम-
मां के हजूर प्रेमी है जाते।
मय्या की महिमा को मिलके है गाते।
साचा दवारा धर्म की जगा है।
भक्तों का द्वारे पे मेला लगा है।
भक्तों ने सिमरन कीया है। २
हरदम, वहां जै जै है हो रही, 'ज्ञान' गुण गाए।
भगतन की मेरी अम्बे मय्या, आशा को पुजाए। हरदम

मन्दिर मसजद गुरुद्वारे

बेशक मन्दिर मसजद तोड़ो (बोबी)

दर मसजद गुरुद्वारे, सब में इश्वर रहिता २
में साची जोत प्रभू की, है 'ज्ञान' कवि सच कहिता
स जन्म अमोलक हीरा २ बिरथा इसको नहीं रोलना
सदा प्रभू की जै बोलना, जै जै बोलना।
नहीं झूठ बोलना है, है सच बोलना जै।
तन मन घोलना, न डोलना, सच बोलना। सदा-

न सिमरना नेकी करनी, है वेदों का, यह कहिना २
त कोईन पुछत आगे, करनी का फल लैना।
ं तराजू हाथ पकड़ के २, घट्ट कबो है नहीं तोलना,
तोलना, नहीं घट्ट तोलना।
नहीं झूठ बोलना है, हैसच बोलना जं
तन मन घोलना, न डोलना, सच बोलना। सदा--
ान' प्रभू का नाम निराला, जीवन सफल बनाए २
प नाम का सिमरन करलो, अंत काम जो आए।
सचा करके ए मन मेरे २ मुक्ति का दर टोलना
खोलना, है दर टोलना।
नहीं झूठ बोलना है, है सच बोलना जं
ानमन घोलना, न डोलना, सच बोलना। सदा-+

शिव गौरां दा विवाह

तर्ज–नी मैं यार मनाणा नी, चाहे लोग बोलीयाँ बोले(दा

गौरां तेरी जंज है आई, सुन लै साडा कहिना
सूट वरी दे किन्ने आए, आया को को गहिना, नी

तेरा बुढा परौणा नी, सुन गल्ल तूं अड़ीये गौरां
ओहदा रूप डरोणा नी, तैनूं चल्ल वखाईये गौरां

घाही दी थां बैल लयांदा, वाजा बिगल बनाया २
पिण्डे मली भबूत ओहने, दाढ़ा गिट्टे आया
है धरत विछौणा नी, सुन गल तूं अड़ीये गौरां। अ

कन्नी बिच्छू २ प्ये ओसदे, नाग विच ने जूड़े
घोटा नाले अक्क धंदूरे भंग विच ओ धूड़े
उस घोटा लौणा नी २ सुण गल तूं अड़ीये गौर
आहदा रूप डरोणां नी, तैनूं चल वखाईये गौरां

नाल ओसदे अजब बराती, मूंह वाग ने आले २
नौ नौ बाटे भंगां पींदे, रंग बड़े ही काले।
ओहनां धूणा तौंणा नी, सुन गल तूं अड़ीये गौरां। ओ

जांजी सारे २, भुक्ख दे मारे, ढिड्डु भड़ोले वरगे।
खाणियां दे जो भरे सी कोठे, कुल्ल भसम ने करगे।
ओहना' वहीं शर्मोणा नी, २ सुन गल तूं अड़ीये गौरां
अंन होर पकौणा नी; तैनूं चल वखाईये गौरां

रूप तेरा है बड़ा सुनक्खा, अंग ओसदे मोटे २
'ज्ञान' हैरान वेखके होईया, भाग तेरे ने खोटे
तूं नाल न सोहना नी, सुन गल तूं अड़ीये गौरां। ओ.

उस्ताद कवि मोनधारी संत दरबारा सिंह [सतिकरतार]

कवि गुरबखश सिंह 'ज्ञान' एन्ड सन्ज



दलजीत सिंह 'दिलबर', गुरदयाल सिंह 'गालिब'

गुरमुख सिंह 'गुलशन' भरपूर सिंह 'आलम' बचित्र सिंह बाज'

सतिकरतार पुस्तक भंडार (रजि०)

संगतपुरा लुधाना, ब्रांच कटड़ा वैष्णों देवी, जम्मू कश्मीर